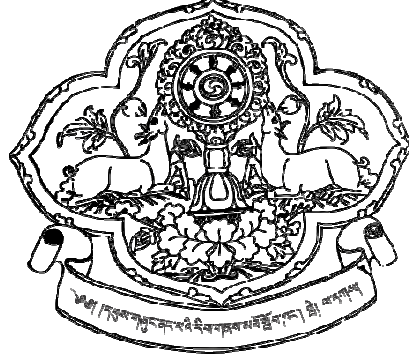


केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान

Central Institute of Buddhist Studies



वार्षिक विवरण
Annual Report
2013-2014

चोगलमसर, लेह-लदाख-194101 (ज. एवं क.)
Choglamsar, Leh-Ladakh 194101 (J&K)

विषयानुक्रमणी

| | पृ.सं. |
|--|--------|
| 1. संक्षिप्त इतिहास | 1 |
| 2. उद्देश्य | 2 |
| 3. प्रबन्धन | 2 |
| 4. उप-समितियों का गठन | 2 |
| 5. धन | 3 |
| 6. कर्मचारी संख्या | 3 |
| 7. विभाग और संकाय | 4 |
| 8. नवीन प्रवेश | 6 |
| 9. परिसंवाद गोष्ठी/कार्यशाला | 7 |
| 10. शैक्षिक यात्रा | 7 |
| 11. प्रकाशन | 8 |
| 12. शोध कार्य | 8 |
| 13. परिसर | 8 |
| 14. पुस्तकालय | 9 |
| 15. संग्रहालय | 9 |
| 16. विशेष व्याख्यान /अन्य शैक्षिक क्रियाकलाप : (क) स्व.ग्यल-स्रस बकुला रिनपोछे व्याख्यानमाला (छ) दवाईयों की सुविधा (ज) वार्षिक क्रीडा-प्रतियोगिता (झ) वार्षिक /मासिक पत्रिका | 9 |
| 17. पाठ्यक्रम | 11 |
| 18. छात्रवृत्ति | 11 |
| 19. परीक्षा परिणाम | 12 |
| 20. गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय | 12 |

| | | |
|-----|---|----|
| 21. | वार्षिकोत्सव | 12 |
| 22. | अन्य महत्वपूर्ण घटनायें (क) भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकार की जयन्ती (ख) सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती, अध्यापक दिवस (ग) हिन्दी दिवस (घ) प्रतिष्ठित व्यक्तियों का स्वागत (ङ) लद्दाख के बौद्ध मठों द्वारा मंत्र पाठ, एक अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर | 13 |
| 23. | अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्तियों का आगमन (क) श्रीमती संगीता गैरौला, सचिव, भारत सरकार (ख) श्री रविन्द्र सिंह, विशेष सचिव (वर्तमान सचिव) (ग) श्री खन्ना, संसद सदस्य (राज्य सभा) (घ) श्रीमती सुषमा दबक, डी. जी. (लेखापरीक्षा) (ङ) वज़ाहत हबीबुल्ला, अध्यक्ष, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक अयोग | 14 |
| 24. | हिमालयी बौद्ध-संस्कृति-विश्वकोश परियोजना के संकलन का आरम्भ | 15 |
| 25. | विदेशी विद्यार्थियों के लिए शिक्षा की व्यवस्था | 15 |
| 26. | पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र | 15 |
| 27. | उपाधि / उपाधि-पत्र प्राप्त करने के पश्चात् छात्रों की नियुक्ति | 16 |
| 28. | डुजिंग फोडंग विद्यालय (क) संक्षिप्त इतिहास (ख) परीक्षा परिणाम (ग) अन्य क्रिया-कलाप (घ) कर्मचारी संख्या | 16 |
| 29. | बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग (हि.प्र.) (क) संक्षिप्त इतिहास (ख) परीक्षा परिणाम (ग) कर्मचारी संख्या | 18 |
| 30 | परिशिष्ट | 20 |
| | i) प्रबन्धक समिति की संरचना | |
| | ii) शिक्षा समिति की संरचना | |
| | iii) वित्त समिति की संरचना | |
| | iv) प्रकाशन समिति की संरचना | |
| | v) ग्रन्थालय समिति की संरचना | |

- vi) शोध समिति की संरचना
- vii) केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की कर्मचारी संख्या
- viii) केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह का परीक्षा परिणाम
- ix) गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयवार एवं कक्षावार नामांकन का विवरण
- x) परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस., जंस्कार)
- xi) डी.पी.एस., जंस्कार की कर्मचारी संख्या
- xii) परीक्षा का परिणाम (बी.डी.एस.वी., केलांग)
- xiii) कर्मचारी संख्या (बी.डी.एस.वी., केलांग)

//////////

1.संक्षिप्त इतिहास :

सन् 1959 से पूर्व लदाख के विद्वान्, श्रामणेर एवं भिक्षु उच्च बौद्ध शिक्षा के लिए तिब्बत जाते थे। वे तिब्बत जाकर वहाँ के विभिन्न प्रसिद्ध महाविहारों, यथा— ड्रि—गुड, ग—दन, सेरा, टशी—ल्हुनपो, ड्रे—पुड, सक्या, सङ्—ङग—छोसलिङ, देरगे आदि में अनेक वर्षों तक बौद्ध विद्याओं का अध्ययन करते थे। परन्तु सन् 1959 की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के परिणामस्वरूप अचानक इस परम्परा में व्यवधान पैदा हुआ। तत्पश्चात् यह आवश्यकता अनुभव की गयी कि बौद्ध दर्शन के विधिवत् अध्ययन के लिए इस आर्य देश अर्थात् भारत में ही एक बौद्ध विद्या केन्द्र की स्थापना की जाय। बौद्ध संस्कृति एवं दर्शन के प्रचार—प्रसार के लिए लेह को चिह्नित किया गया, जो प्राकृतिक, भौगोलिक एवं पारम्परिक दृष्टि से सर्वथा अनुकूल था।

तदनुसार चौदहवें परमपावन दलाई लामा जी के वरिष्ठ गुरु योंगजिन लिङ रिन्पोछे द्वारा वर्तमान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की पूजन—विधि द्वारा स्थापना की गयी। यह संस्थान प्रारंभ में 'बौद्ध दर्शन महाविद्यालय' के नाम से जाना जाता था। सन् 1962 में स्व. भदन्त कुशोक बकुला जी के आग्रह पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने लदाख के लोगों के बीच इस प्रकार के संस्थान की आवश्यकता का अनुभव किया। तदनुसार उन्होंने इस संस्थान को प्रबंधन एवं वित्तीय सहायता के लिए भारत सरकार के संस्कृति विभाग को सौंपना स्वीकार किया।

प्रारम्भ में इस संस्थान में मात्र 10 भिक्षु छात्र अध्ययन करते थे, जो लदाख के विभिन्न गोनपाओं से संबद्ध थे। छात्रों को भोट साहित्य तथा बौद्ध दर्शन पढ़ाने के लिए दो अध्यापकों को नियुक्त किया गया था। लगभग तीन वर्षों तक सभी विद्यार्थियों एवं अध्यापकों का खर्च उपर्युक्त दस गोनपाओं ने वहन किया। सन् 1959 से 1961 तक यह विद्यालय लेह में स्थित रहा। उसके पश्चात् इसको लेह से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित स्पितुग गाँव में स्थानान्तरित किया गया।

सन् 1973 में संस्थान को लेह से 8 किलोमीटर दक्षिण—पूर्व दिशा में चोगलमसर में पुनः स्थानान्तरित किया गया। सन् 1964 में संस्थान को एक शैक्षिक संस्थान के रूप में जम्मू व कश्मीर पंजीयन कानून 1941 के अन्तर्गत पंजीकृत किया गया। प्रारम्भ में यहाँ बौद्ध दर्शन के अतिरिक्त संस्कृत, हिन्दी, भोटी एवं अंग्रेजी विषयों का अध्ययन होता था। सन् 1973 में संस्थान को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ.प्र. से सम्बद्ध कराया गया। बौद्ध विद्या के प्रकाण्ड तिब्बती विद्वान् भदन्त येशे थुबतन ने 1967 तक संस्थान के प्रथम प्राचार्य के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात् प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् भदन्त लोछोस रिन्पोछे जी की संस्थान के द्वितीय प्राचार्य के रूप में नियुक्ति हुई। डॉ.

टशी पलजोर ने सन् 1979 से 2005 तक संस्थान के प्राचार्य के रूप में कार्य किया। सन् 2005 से 2010 तक पाँच साल प्राचार्य के रूप में कार्य करने के बाद डॉ० नवांग छेरिंग संस्थान के प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्ति हुए और 15 जून 2010 को डॉ० वंगछुग दोर्जे नेगी ने प्राचार्य पद का प्रभार लिया। तब से वे प्राचार्य के पद पर कार्यरत हैं।

2. उद्देश्य : संस्थान का मूल उद्देश्य छात्रों की प्रतिभा अर्थात् व्यक्तित्व को बौद्ध विचार, साहित्य, कला एवं विविध आधुनिक विषयों के ज्ञान द्वारा विकसित और सुसज्जित करना है। सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्रों की बौद्ध संस्कृति एवं कला की शिक्षा हेतु यह इस देश का एक अपूर्व संस्थान है। उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संस्थान ने निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किये हैं—

- क. बौद्ध दर्शन का परिपक्व ज्ञान, जिसके अन्तर्गत इतिहास, संस्कृति एवं कला का अध्ययन।
- ख. प्राचीन शास्त्रों एवं आधुनिक भाषाओं का अध्ययन, जिसमें संस्कृत, भोटी, पालि, हिन्दी और अंग्रेजी समाहित हैं।
- ग. विभिन्न आधुनिक विषयों का अध्ययन, जिनमें इतिहास, राजशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित, तुलनात्मक दर्शन, सामान्य विज्ञान तथा सामाजिक शास्त्र सम्मिलित हैं।
- घ. बौद्ध धर्मग्रन्थों को संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तथा भारत की अन्य भाषाओं में अनुवाद करना
- ङ. दुर्लभ पांडुलिपियों का संग्रह, संरक्षण तथा उनका प्रकाशन।
- च. बौद्ध दर्शन, इतिहास, कला एवं हिमालयी संस्कृति पर शोध की व्यवस्था।
- छ. पुरातात्विक महत्व की प्राचीन कला-कृतियों का संग्रह एवं संरक्षण।
- ज. अमची (भोट-चिकित्सा विज्ञान), धार्मिक शिल्पकला, काष्ठकला, थंका चित्रकला आदि सांस्कृतिक महत्व के विषयों का अध्ययन।

3. प्रबंधन : संस्थान का प्रबंधन संयुक्त सचिव, संस्कृति विभाग, भारत सरकार की अध्यक्षता में गठित एक प्रबंधकारिणी के द्वारा सम्पन्न होता है। इस प्रबंधकारिणी के सदस्यों का संगठन विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, संघों, विश्वविद्यालयों तथा बौद्ध विद्वानों के प्रतिनिधियों से बना है। प्रबंधकारिणी के पुनर्गठन की पहली बैठक से लेकर सदस्यों के कार्यकाल की अवधि तीन साल है। संस्थान के निदेशक इस प्रबंधकारिणी के सदस्य-सचिव हैं। वर्तमान में इस प्रबंधकारिणी की संरचना पृष्ठ संख्या — पर परिशिष्ट के रूप में है। इस प्रबंधकारिणी की बैठक हर छः महीनों के बाद आयोजित की जाती है।

4. उप-समितियों की संरचना :

प्रबंधकारिणी के निर्देशों के समुचित पालन हेतु अनेक उप-समितियों की संरचना की गई है। इन उप-समितियों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :

शिक्षा समिति : प्रबंधकारिणी द्वारा प्रख्यात पण्डितों एवं विद्वानों की एक शिक्षा समिति की संरचना की गई है। तत्सम्बन्धी क्षेत्रों में प्रबंधकारिणी को उसकी आवश्यकतानुसार सलाह देने के लिए वर्ष में एक

या दो बार इस समिति की बैठक होती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. — पर है।

वित्त समिति : संस्था के स्मरण-पत्र और संस्थान के नियम एवं नियमन के अनुसार उप-सचिव (वित्तीय)/निदेशक (वित्त), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली की अध्यक्षता में एक वित्त समिति की संरचना की गई है। वित्तीय आशयों से संबंधित प्रस्तावों पर समुचित सिफारिश बनाने के लिए वर्ष में एक या दो बार इस समिति का बैठक होती है। यह समिति संस्थान के वार्षिक लेखा एवं आय-व्यय आदि की भी समीक्षा करती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. — पर है।

प्रकाशन समिति : संस्थान हिमालय की कला, संस्कृति एवं भाषा से सम्बद्ध दुर्लभ ग्रन्थों तथा पाण्डुलिपियों का प्रकाशन भी करता रहता है। इन दुर्लभ ग्रन्थों/पाण्डुलिपियों को प्रेस में भेजने से पूर्व इनके प्रकाशन की समीक्षा एवं उपादेयता प्रमाणित करने के लिए प्रकाशन समिति के समक्ष रखा जाता है। यह समिति प्रकाशन के क्षेत्र में प्रख्यात विद्वानों एवं विशेषज्ञों को जोड़कर बनी है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. — पर है।

ग्रन्थालय समिति : ग्रन्थालय समिति पुस्तकालय के क्षेत्र में जानकारी प्राप्त विशेषज्ञों से बनी है और यह समिति समय-समय पर ग्रन्थालय की प्रगति एवं उत्कृष्टता के लिए सिफारिश करती है, जिसमें अतिरिक्त कर्मचारी, यंत्रों (मशीन) एवं उपकरणों, डिजिटलीकरण और सूचीपत्र आदि की आवश्यकतायें सम्मिलित हैं। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. — पर है।

शोध समिति : संस्थान की शोध-समिति शोधवृत्ति हेतु शोध-छात्रों का चयन करने के लिए साक्षात्कार का कार्य-संचालन करती है और शोध-छात्रों के क्रियाकलापों तथा प्रगति की समीक्षा करती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. — पर है।

5. धन : भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत संस्कृति विभाग इस संस्थान को सम्पूर्ण आर्थिक अनुदान प्रदान करता है। वर्ष 2013-14 के लिए संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार ने प्रबन्धन समिति द्वारा अनुमोदित संस्थान की विभिन्न योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए योजनागत तथा योजनेतर मदों में क्रमशः रु 785.00 लाख एवं रु 690.00 लाख स्वीकृत किये हैं।

6. कर्मचारी संख्या : संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग से संस्थान के निदेशक एक प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी के रूप में संस्थान का पर्यवेक्षण करते हैं। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के कर्मचारियों की कोटि-वार संख्या, शैक्षणिक एवं शिक्षणेतर श्रेणी का पृथक विवरण पृष्ठ संख्या — पर परिशिष्ट के रूप में है।

7. **संकाय तथा विभाग** : इस संस्थान को विश्वविद्यालय की पद्धति पर सुचारु तथा प्रभावी रूप से चलाने के लिए बौद्ध विहारों की परम्परा, पांच महाविद्याओं के आधार पर संस्थान में संकायों एवं विभागों की स्थापना की गयी है, जो निम्न है :

1. अध्यात्म तथा न्यायविद्या संकाय (Faculty of Philosophy and Logic)
2. शब्दविद्या संकाय (Faculty of Literature and Language)
3. भोट चिकित्सा एवं शिल्प विद्या संकाय (Faculty of Bhot Medical Sciece and Arts)
4. आधुनिक विद्या संकाय (Faculty of Modern Studies)
- 5.

इस के अतिरिक्त उक्त संकायों को इनके अध्ययन के अनुसार विभिन्न विभागों में विभाजित किया गया है, जिनका वर्णन निम्नप्रकार है :

1) अध्यात्म तथा न्यायविद्या संकाय (Faculty of Philosophy and Logic)

यह संकाय मूलशास्त्र एवं विभिन्न सम्प्रदायों की शाखाओं सहित छः विभागों से बना है। बौद्ध विहारों की प्रणाली के अनुसार अध्यात्म तथा न्यायविद्या दो स्वतन्त्र विद्याएँ हैं, जिनके अनेक विभाग हैं, परन्तु संस्थान के पाठ्यक्रम के अनुकूलता के लिए इन को साथ रखा गया है। उपरोक्त संकाय के अंतर्गत निम्न विभाग हैं—

- i) भोट बौद्ध दर्शन विभाग
- ii) बौद्धदर्शन विभाग (संस्कृत माध्यम)
- iii) जिङ्मा सम्प्रदाय विभाग
- iv) कग्युद् सम्प्रदाय विभाग
- v) सक्या सम्प्रदाय विभाग
- vi) गेलुग् सम्प्रदाय विभाग

2) शब्दविद्या संकाय (Faculty of Language)

यह संकाय भाषाओं से बना है। इस संकाय के अंतर्गत निम्न विभाग हैं—

- i) भोटी / तिब्बती विभाग
- ii) संस्कृत विभाग
- iii) पालि विभाग
- iv) अंग्रेजी विभाग
- v) हिन्दी विभाग

3) भोट चिकित्सा एवं शिल्पविद्या संकाय (Faculty of Bhot Medical Sciece and Arts)

संस्थान हिमालय की परम्परागत कला तथा संस्कृति को संरक्षण देने और उन्नत करने में अत्यधिक रुचि ले रहा है। तदनुसार इस क्षेत्र की कला तथा संस्कृति को संरक्षित एवं उन्नत करने हेतु निम्न विभागों की स्थापना की गई है :

i) **भोट चिकित्सा तथा ज्योतिष विभाग** : रोगियों को जड़ी-बूटियों से निर्मित औषधियाँ उपलब्ध कराना इस क्षेत्र की सैकड़ों वर्ष से चली आ रही प्राचीन परम्परा है। इस प्रदेश में जब ऐलोपैथिक दवा नहीं थी, उस समय अमची विद्या (भोट चिकित्सा) ही अधिक प्रसिद्ध थी। वर्तमान समय में भी इस प्रदेश के लोग अमची (भोट चिकित्सा) को सर्वाधिक उपयोगी मानते हैं, क्योंकि इससे दुष्प्रभाव नहीं होते हैं। इन्हीं कारणों के चलते लोग इसे पसन्द करते हैं। उक्त बातों को ध्यान में रखकर संस्थान इच्छुक विद्यार्थियों को अमची (भोट चिकित्सा विद्या) की शिक्षा प्रदान कर रहा है। बारहवीं उत्तीर्ण विद्यार्थी, जिन्हें भोटी भाषा का पर्याप्त ज्ञान है, केवल उन्हें ही छः वर्ष के अमची (भोट चिकित्सा विद्या) पाठ्यक्रम के लिए उपयुक्त विद्यार्थी माना जाता है। ऐसे अनेक विद्यार्थी हैं, जिन्हें उक्त उपाधि प्राप्त हुई है और वे आज व्यक्तिगत एवं सरकारी पदों पर अमची कार्य कर रहे हैं।

ii) **पारम्परिक थंका/चित्रकला विभाग** : चित्रकला इस क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध है। लदाख के बौद्ध विहारों में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध है, जिनमें विभिन्न प्रकार के थंका-चित्र एवं भित्ति-चित्र दिखाई पड़ते हैं। अलची विहार के भित्ति-चित्र तथा हेमिस एवं लामायुरु गोनपा के थंका-चित्र बहुत प्रसिद्ध हैं। इन विहारों में कुछ थंकाएँ हजारों वर्ष पुरानी हैं, जिनका आज भी दर्शन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यहां के प्रत्येक गांव में एक गोनपा अवश्य दिखाई पड़ता है, जिसमें थंकाओं, भित्ति-चित्रों एवं मूर्तियों का अपार भण्डार है। गर्मी के समय में दुनियाँ भर से पर्यटक लदाख में स्थित थंकाओं, भित्ति-चित्रों, मूर्तियों तथा अन्य धार्मिक वस्तुओं से सुसज्जित बौद्ध विहारों का दर्शन करने आते हैं। संस्थान ने विद्यार्थियों के प्रशिक्षणार्थ भोटी चित्रकला पाठ्यक्रम की व्यवस्था कर रखी है। वर्तमान में अनेक विद्यार्थी थंका चित्रकला का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

iii) **पारम्परिक मूर्ति-कला विभाग** : लदाख क्षेत्र में मिट्टी से मूर्तियों तथा मुखौटों का निर्माण करना एक आम बात है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि यहां के बौद्ध विहार मूर्तियों एवं मुखौटों से परिपूर्ण हैं। यहां के प्रत्येक विहार में विशेष तिथि पर धार्मिक त्यौहार अर्थात् गुस्तोर/दोसमोछे/छे-चु मनाये जाते हैं। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के बुद्धों, बोधिसत्त्वों, इष्टदेवों आदि की वेश-भूषा एवं मुखौटा धारण कर मुखौटा-नृत्य जो छमस् के रूप में प्रसिद्ध है, का प्रदर्शन किया जाता है। संस्थान ने विद्यार्थियों को बुद्धों, बोधिसत्त्वों, देवी-देवताओं, इष्टदेवों आदि की मूर्ति के निर्माण हेतु कला के प्रशिक्षणार्थ व्यवस्था कर रखी है। इच्छुक विद्यार्थी, जो दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं, उन्हें छः वर्ष का मूर्तिकला प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। वर्तमान में अनेक विद्यार्थी मूर्ति एवं मुखौटा निर्माण कला के अन्तर्गत प्रशिक्षण ले रहे हैं।

iv) पारम्परिक काष्ठकला विभाग : प्राचीन काल में लदाख में पुस्तकों के प्रकाशन हेतु कोई मुद्रण यन्त्र उपलब्ध नहीं था। ऐसी स्थिति में लोग लकड़ी के ब्लॉकों से धार्मिक ग्रन्थों या अन्यान्य ग्रन्थों की प्रतिलिपि प्राप्त कर लेते थे। धार्मिकग्रन्थों की लिपियां विशेषकर कठोर लकड़ी के ब्लॉक पर नियमित रूप से खोदी जाती हैं, जिससे बाद में पढ़ने के लिए किसी कागज़ पर छपायी की जा सके। एक बार किसी लकड़ी के ब्लॉक पर खुदाई हो जाने पर ज़ेरक्स मशीन की तरह उससे हजारों बार प्रतिलिपियां निकाली जा सकती है। प्राचीन काल में लदाख में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध थी। यहाँ बौद्धविहारों एवं बौद्ध गृहों के छत पर पाँच रंगों की पताकायें फहराने की परम्परा है, जिन्हें दरचोग के नाम से जाना जाता है और मुख्य द्वारों पर बड़ी लम्बी पताका फहरायी जाती है जो दरछेन कहलाती है। कपड़े की पताकाओं पर लकड़ी के ब्लॉकों से सूत्रपाठ, मन्त्र, लुङ्ता एवं ग्यलछेन चेमो (द्वजाग्र)छापे जाते हैं, जो आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक हैं। उक्त काष्ठकला के निरन्तर संरक्षण के उद्देश्य से संस्थान ने एक छः वर्षीय काष्ठकला पाठ्यक्रम की व्यवस्था कर रखी है। यहाँ छात्र लकड़ी के ब्लॉक के निर्माण के अतिरिक्त साज-सज्जा वस्तु, यथा- ड्रेगन, पक्षी, सिंह, घोड़ा आदि जन्तुओं एवं अन्य वस्तुओं की निर्माण कला का भी प्रशिक्षण लेते हैं। लदाख क्षेत्र में यह अत्यन्त प्रसिद्ध है और व्यक्ति अपनी जीविका के लिए इसे अच्छा क्षेत्र मानता है।

4) आधुनिक विद्या संकाय (Faculty of Modern Studies)

इस संकाय के अन्तर्गत पांच विभाग हैं जो निम्न प्रकार हैं :

- i) बौद्ध इतिहास तथा संस्कृति (बौद्ध पुराणेतिहास) विभाग
- ii) तुलनात्मक दर्शन विभाग
- iii) इतिहास विभाग
- iv) अर्थशास्त्र विभाग
- v) राजनीतिक शास्त्र विभाग

8. नवीन प्रवेश :

संस्थान के निर्धारित प्रवेश के नियमों के अन्तर्गत प्रवेश समिति द्वारा साक्षात्कार के आधार पर छात्रों को कक्षा 6 से 9 तक में प्रवेश दिया जाता है। संस्थान के शाखा गोनपा विद्यालयों के छात्रों को संस्थान में सीधे प्रवेश दिया जाता है। संस्थान के छः वर्षीय पाठ्यक्रम वाले अमची, तिब्बती थंका चित्रकला, मूर्तिकला तथा काष्ठ कला में भी सीट की उपलब्धता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। वर्तमान सत्र के दौरान प्रस्तुत विवरण के अनुसार व्यावसायिक कक्षाओं के साथ सभी कक्षाओं में कुल 112 नये छात्रों को प्रवेश दिया गया।

9. परिसंवाद गोष्ठी/कार्यशाला :

(क) प्राप्त विवरण के अनुसार वर्तमान सत्र के दौरान संस्थान ने अपने परिसर में दिनांक 01-07-2013 से लेकर 04-07-2013 तक “भारत में शिक्षा प्रणाली : प्राचीन, मध्युगीन तथा वर्तमान रूपों और आगामी संभावनाओं ” विषय पर भारत के बौद्ध महाविहारों एवं विश्वविद्यालयों से विद्वानों को आमन्त्रित कर चारदिवसीय अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठी का आयोजन किया। उक्त परिसंवाद गोष्ठी का उद्घाटन दिनांक 1 जुलाई 2013 को बौद्ध इंडिक स्टडीज सांची विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. समदोड रिनपोछे जी ने किया। पूज्य तोगदनरिनपोछे तथा श्री जीगमेद टगपा, निदेशक, एल.आर.ई.डी.ए. लदाख स्वयत्तशासी पर्वतीय विकास परिषद प्रधान अतिथि के रूप में उपस्थित थे। भारतवर्ष के विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थाओं एवं विहारों से पधारे विद्वानों ने इस परिसंवाद गोष्ठी में भाग लिया और अपने शोधपत्र/निबन्ध प्रस्तुत किये। इनके अतिरिक्त इस परिसंवाद गोष्ठी में अनेक संख्या में लदाख के स्थानीय विद्वानों ने भी भाग लिया। परिसंवाद गोष्ठी में प्रस्तुत किये गये शोधपत्रों/निबन्धों को “लदाख प्रभा” शीर्षक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाता है। इस संगोष्ठी के समापन समारोह का संचालन डॉ. तोनडुब छेवंग, अध्यक्ष, लदाख बौद्ध संघ, लेह ने किया।

(ख) **वर्कशाप :** संस्थान ने दिनांक 24 तथा 25 नवम्बर 2013 को “कालचक्र अभिषेक की शिक्षा एवं अभ्यास” विषय पर दो दिन के लिए वर्कशाप अयोजित की। इस दौरान आठ विद्वानों ने अपने मूल्यवान शोधपत्र/निबन्ध प्रस्तुत किये और उन पर पर्याप्त चर्चा हुई। इस वर्कशाप में लगभग 1500 श्रद्धालुओं ने भाग लिया। यह प्रयास अत्यन्त सफल रहा और जिज्ञासुओं ने भविष्य में भी इस प्रकार के वर्कशाप अयोजन करने का माँग की।

10. शैक्षिक यात्रा : संस्थान के उत्तर मध्यमा द्वितीय, शास्त्री तृतीय, आचार्य द्वितीय वर्ष, शिल्पकला, थंका चित्रकला तथा काष्ठकला कक्षा के 48 छात्रों का एक दल जनवरी 2014 में 36 दिनों के लिए शैक्षिक यात्रा (भारत दर्शन) के लिए भेजा गया। इस दल ने दिल्ली, हैदराबाद, बेंगलौर, मैसूर, हुबली, गोवा, मुम्बई, अजन्ता और एलोरा का भ्रमण किया। शैक्षिक यात्रा का आयोजन संस्थान के डॉ. सोनम वंगछुग, प्राध्यापक और श्रीमती शशीरावत के नेतृत्व में किया गया। उक्त यात्रा का उद्देश्य छात्रों को देश की ऐतिहासिक, औद्योगिक, धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर से परिचित कराना तथा उनमें राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करना है।

कुछ विद्यार्थियों को स्थानीय शैक्षिक यात्रा (लदाख दर्शन) के अन्तर्गत नुबरा घाटी में 5 दिन के लिए संस्थान के तीन अध्यापकों के नेतृत्व में ले जाया गया था। उक्त यात्रा में पूर्वमध्यमा द्वितीय कक्षा के कुल 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने ऐतिहासिक स्थल, विहार, झील आदि का दर्शन किया। इस प्रकार संस्थान ने इन शैक्षिक यात्राओं के संचालन पर रु. 6.20 लाख रुपये व्यय किये।

उपरोक्त शैक्षिक यात्राओं के अतिरिक्त 23 अमची छात्रों के दल ने अमची अध्यापक के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में दिनांक 4 अगस्त 2013 से 13 अगस्त 2013 तक 10 दिन के लिए केलंग, मेरी और मनाली का भ्रमण किया। इस यात्रा का उद्देश्य अमची पद्धति से औषधि बनाने के लिए विभिन्न आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों की पहचान कराना है। इसके लिए उन्होंने विविध प्रकार की जड़ी-बूटियों का संग्रह करके प्रदर्शन किया। उन जड़ी-बूटियों के नमूनों को अलबम में सुरक्षित रखा गया है। भ्रमण के दौरान कच्चे द्रव्यों को जमा करते हुए अनेक प्रकार की जड़ी बूटियों की पहचान की गयी। संस्थान के अमची विभाग ने इस वर्ष के दौरान प्रायोगिक कक्षा के द्वारा विभिन्न अमची औषधियाँ स्वयं बनायीं, जिनमें चूर्ण, गोली और अर्क सम्मिलित हैं। प्राप्त विवरण के अनुसार सत्र के दौरान उन औषधियों को रोगियों के लिए निःशुल्क पर मुहैया कराया।

11. प्रकाशन : संस्थान ने अब तक विभिन्न विषयों पर अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन किया है जिनमें अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठी का निबन्ध संकलन (लदाख-प्रभा) का प्रकाशन शामिल है। वर्ष 2013-14 के दौरान संस्थान ने लदाख-प्रभा भाग-16 (भारतीय संस्कृति को बौद्ध धर्म का योगदान), लदाख-प्रभा-17 (माध्यमिक दर्शन), लदाख-प्रभा-18 (भारत में शिक्षा प्रणाली : प्राचीन, मध्ययुगीन तथा वर्तमान संदर्भ तथा संभावनाएँ) और 'दोहा' जो महामुद्रा की व्याख्या है, जिसका नामकरण दोहा के आठ निधि, ग्रन्थों का प्रकाशन किया।

12. शोध कार्य : संस्थान ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पद्धति पर बौद्ध धर्म तथा चार भोट बौद्ध सम्प्रदायों पर शोध हेतु चार शोधवृत्तियों की व्यवस्था की है। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा अभी तक आठ शोध छात्रों को पी-एच. डी. (विद्यावारिधि) की उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। वर्तमान में चार शोध-छात्र पी-एच. डी. (विद्यावारिधि) के लिए शोधरत हैं।

13. परिसर : यह संस्थान लेह शहर के दक्षिण की ओर आठ किलोमीटर दूर चोगलमसर में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। इसके दो परिसर हैं-नया और पुराना परिसर। पुराना परिसर 23 कनाल के क्षेत्रफल में स्थित है। इसमें कक्षा 6 से 8 तक के कुल 270 कनिष्ठ छात्रों के लिए कक्षाएँ चलायी जाती हैं। यह विद्यालय प्रशिक्षित स्नातक (टी.जी.टी.) तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग से एक प्रधान अध्यापक के प्रभार में चलाया जाता है। इसमें शैक्षिक विभाग, एक छोटा सभाभवन, कार्यालय तथा बच्चों के लिए पुस्तकालय हैं। पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र जैसी संस्थान की कुछ परियोजनाएँ पुराने परिसर में कार्यरत हैं।

नया परिसर पुराने परिसर से आधा किलोमीटर दूरी पर स्थित है। इस में संस्थान का पृथक् कक्षा-भवन, प्रशासनिक भवन, पुस्तकालय तथा तीन छात्रावास, हैं जिनमें सौ-सौ विद्यार्थियों के रहने की क्षमता है, जो भिक्षुओं, छात्रों तथा छात्राओं को रहने के लिए अलग-अलग दिये गये हैं। 60 नये परिसर कर्मचारी आवास हैं और एक अतिथि भवन है, जिसमें 20 अतिथि रुक सकते हैं। इसी प्रकार नये परिसर में एक खेल-मैदान है, जो दर्शकों के बैठने की जगह, प्रसाधन कक्ष, भण्डार आदि सुविधाओं से युक्त है। संस्थान के विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने के लिए 700 लोग बैठने की क्षमता

वाला एक सभाभवन है, जिसका उद्घाटन 8 अक्टूबर, 2013 को परम पूज्य डी गुड् स्क्यपगोन छेछ्ङ् रिनपोछे जी ने किया। इस उद्घाटन समारोह में रिगजीन स्पालबर, माननीय मुख्य कार्यकारी पार्षद, लदाख स्वयात्तशासी पर्वतीय विकास परिषद प्रधान अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर परम पूज्य डी गुड् स्क्यपगोन छेछ्ङ् रिनपोछे जी ने संस्थान को एक सेट कग्युर (108 भाग) भेंट किये, जो स्वर्ण अक्षरों में लिखा है और जिस का मूल्य लगभग 70.00 लाख रूपया है। इस के अतिरिक्त दार्शनिक वादविवाद भवन, विद्यार्थियों का मनोरंजन केन्द्र और क्रीडाभवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

14. पुस्तकालय : संस्थान का महत्वपूर्ण अंग इसका पुस्तकालय है, छात्र एवं अध्यापक ही नहीं अपितु संस्थान के अन्य सदस्य भी सूचना एवं ज्ञान की प्राप्ति हेतु इस पर निर्भर रहते हैं। बड़ी संख्या में देशी एवं विदेशी पर्यटक भी इस पुस्तकालय में आते रहते हैं। संस्थान के पुस्तकालय को नये परिसर में स्थानान्तरित कर लिया गया है, जिसके लिए तीन मंजिला पृथक भवन बना है। पुस्तकालय को 'स्लिम थुमी सॉफ्टवेअर' लगाकर 'कॅम्प्यूटाराइज' किया गया है। इस पुस्तकालय में तीन विभाग हैं— (1) सामान्य विभाग, (2) भोट अथवा सुंगबुम विभाग और (3) सन्दर्भ विभाग। इस पुस्तकालय में कुल 30368 ग्रन्थ भोटी, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, पालि तथा उर्दू भाषाओं में धार्मिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, काव्य एवं सामाजिक विषयों पर उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में विश्वकोश, शब्दकोश तथा वार्षिक ग्रन्थों का संग्रह भी है। प्रेषित विवरण के अनुसार इस सत्र के दौरान संस्थान ने रू0 2.59 लाख की कुल 825 पुस्तकें क्रय की गयीं। पुस्तकालय 20 भारतीय एवं विदेशी शोध पत्रिका/समसामयिक पत्रिकाओं का ग्राहक बना। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की भाषाओं में अन्य 24 प्रकार की पत्रिकायें क्रय की गई हैं। विद्यार्थियों एवं पाठकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय 12 प्रकार के समाचारपत्रों का भी क्रय करता है।

15. संग्रहालय : संस्थान ने एक छोटा पुरातात्विक संग्रहालय स्थापित किया है। विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों का संचय कर इस संग्रहालय में स्थापित किया गया है। इस संग्रहालय में लदाख की बौद्ध कलाकृतियों, चित्रों और छायाचित्रों के साथ-साथ विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों के पुरातात्विक अवशेषों के नमूने संरक्षित किये गये हैं। लदाख में यह अपने ढंग का एक अनूठा संग्रहालय है, जो प्रति वर्ष यहाँ बड़ी संख्या में आने वाले देशी एवं विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

16. विशेष व्याख्यान/अन्य शैक्षिक क्रियाकलाप :

(क) स्व. ग्यल-स्रस बकुला रिनपोछे व्याख्यान माला :

स्व. कुशोक बकुला रिनपोछे लदाख के एक प्रकाण्ड विद्वान् एवं समाज-सुधारक थे। उन्होंने लदाख के विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन इस प्रदेश की गरीब एवं ज़रूरतमंद जनता के कल्याण एवं निर्धनता के उन्मूलन में लगाया। जम्मू-कश्मीर सरकार के मन्त्रिमण्डल में उनका एक विशेष राजनीतिक पद होने के अतिरिक्त वे भारत की लोकसभा के सदस्य

तथा मंगोलिया में भारत के राजदूत भी रहे। उनकी सामाजिक सेवा के आधार पर भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। उनके प्रयासों से ही सन् 1959 में इस प्रदेश की बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण एवं विकासार्थ इस केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की स्थापना हुई, जो पहले बौद्ध दर्शन विद्यालय के रूप में जाना जाता था। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबन्ध समिति ने दिनांक 27-02-2004 की अपनी बैठक में उनकी स्मृति में एक विशेष व्याख्यान माला प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। प्राप्त विवरण के अनुसार संस्थान में एक व्याख्यान का आयोजन 9 जून 2013 को किया गया जिसके लिए प्रकाण्ड बौद्ध विद्वान प्रो.समदोङ रिनपोछे, बौद्ध इंडिक स्टडीज सांची विश्वविद्यालय के कुलाधिपति को आमन्त्रित किया गया था। उन्होंने एक विशेष विषय 'हिमालयी संस्कृति संरक्षण के लिए केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह का योगदान' पर व्याख्यान दिया। उन्होंने दूसरा व्याख्यान दिनांक 30 जून 2013 को लेह के चोखङ् विहार में 'बौद्धधर्म की मूल धारणा' विषय पर दिया। इन व्याख्यानों में बड़ी संख्या में संकाय सदस्य, कर्मचारी, विद्यार्थी और अन्य जिज्ञासु जन उपस्थित थे।

(ख) दवाईयों की सुविधा : संस्थान में एक अपना दवाखाना है, जहाँ से विद्यार्थी, अध्यापक एवं कर्मचारियों को दवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके लिए एक अस्थायी डॉक्टर की नियुक्ति की गयी है जो एक दिन के अन्तर पर यहाँ आते हैं। एक परिचारिका एवं एक सहायिका परिचारिका उक्त डॉक्टर की सहायता करती हैं। यह दवाखाना अध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक है। सत्र के दौरान संस्थान ने रु 1.20 लाख के दवाईयों खरीदकर विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए विद्यार्थी एवं कर्मचारियों को दी गयीं।

(ग) वार्षिक क्रीड़ा-प्रतियोगिता : विद्यार्थियों को स्वस्थ रखने के उद्देश्य से संस्थान ने गत वर्ष दस दिवसीय 24-11-2013 से 03-11-2013 तक वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन कराया, जिसके अंतर्गत अनेक प्रकार के खेल-कूदों की गतिविधियों का प्रबंध किया गया। क्रीड़ाप्रतियोगिता तीन सदनों, यथा- नालन्दा, विक्रमशिला एवं तक्षशिला में कराई जाती है। इन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले तथा विजेताओं को वार्षिकोत्सव के दौरान पुरस्कारों एवं प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया।

(घ) वार्षिक पत्रिका : संस्थान 'रिगपे दुद्चि' नामक एक वार्षिक पत्रिका प्रकाशित करता है जिसमें संस्थान के अध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी विभिन्न विषयों पर अपना लेख प्रस्तुत करते हैं। विगत वर्ष में संस्थान के अध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न क्रिया-कलापों में प्राप्त किये गये चित्रों को इस पत्रिका में विशेष रूप से प्रकाशित किया। यह सम्पूर्ण रूप से एक सांस्थानिक पत्रिका है एवं इसमें पूर्ण रूप से संस्थान के स्वरूप तथा उद्देश्य को ही सम्मिलित किया जाता है।

(ङ) एड्स/एचआईवी जागरूकता अभियान कार्यक्रम : संस्थान में लदाख छात्रसंघ चंडीगढ़ और लदाख स्वयत्तशासी पर्वतीय विकास परिषद द्वारा संयुक्त रूप से 6 जून और 11 जून 2013 दो दिन एड्स/एचआईवी जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। इस अवसर पर

प्रशिक्षित विद्यार्थियों तथा डॉक्टरों ने एड्स/एचआईवी के रोकथाम और जागरूकता पर व्याख्यान दिया। संस्थान के विद्यार्थियों ने इसमें सक्रिय भाग लिया और विशेषज्ञों से विषय से सम्बन्धित प्रश्न किये।

17. पाठ्यक्रम : प्रारम्भ में संस्थान में एक दस वर्षीय पाठ्यक्रम प्रचलित था जिसके अन्तर्गत हिन्दी, संस्कृत, बौद्ध दर्शन एवं भोटी भाषा की पढ़ाई होती थी। सन् 1973 में संस्थान, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध हुआ तथा संस्थान के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, सीमान्त प्रदेशीय छात्रों की आवश्यकतानुसार एक विशेष पाठ्यक्रम तैयार किया गया। पाठ्यक्रम पर समय-समय पर पुनर्विचार करने के लिए विश्वविद्यालय ने एक अध्ययन समिति गठित की है। पाठ्यक्रम की समीक्षा तथा नये पाठ्यक्रम को लागू करने आदि के लिए समिति की बैठक वर्ष में एक बार होती है।

संस्थान के पाठ्यक्रम में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, भोट साहित्य एवं बौद्ध दर्शन अनिवार्य विषय हैं। राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, पालि, इतिहास, तुलनात्मक दर्शन, अमची/तिब्बती चिकित्साविद्या, काष्ठकला, शिल्पकला तथा चित्रकला वैकल्पिक विषय के रूप में हैं। विश्वविद्यालय द्वारा गठित अध्ययन समिति के अनुमोदन पर संस्थान के पाठ्यक्रम को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने स्वीकृत किया है।

सन् 1984 ई० से जम्मू तथा कश्मीर विश्वविद्यालयों एवं राज्य विद्यालय शिक्षा समिति ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रमाणपत्रों को पारस्परिक आदान-प्रदान के तौर पर मान्यता प्रदान करते हुए निम्नलिखित परीक्षाओं से समकक्षता प्रदान की है—

| | |
|-----------------------------|-------------------------|
| 1. पूर्वमध्यमा | मैट्रिक (हाई स्कूल) |
| 2. उत्तर मध्यमा | उच्चतर माध्यमिक (भाग-2) |
| 3. शास्त्री अंग्रेजी के साथ | बी.ए. (स्नातक) |
| 4. आचार्य | एम.ए. (स्नातकोत्तर) |

प्राप्त विवरण के अनुसार सत्र के दौरान संस्थान ने तिब्बत के महायान सम्प्रदाय शास्त्रों को अनिवार्य वैकल्पिक विषय के रूप में कक्षा शास्त्री और आचार्य के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया। इस कार्य का विभाग के सदस्यों, विद्यार्थियों तथा लदाख के अन्य विद्वानों ने स्वागत किया।

18. छात्रवृत्ति : वर्ष 2013-2014 के दौरान संस्थान में अध्ययनरत छात्रों में से कुल 708 छात्रों पर 685.00 रुपये से 845.00 रुपये के बीच प्रतिमाह की दर से छात्रवृत्ति के रूप में कुल 46.09 लाख रुपये खर्च किये गये।

उपरोक्त छात्रवृत्ति के अतिरिक्त, लदाख के विभिन्न क्षेत्रों में संस्थान के अधीनस्थ 50 गोनपा/श्रामणेरीका विद्यालयों के कुल 921 छात्रों को 69.19 लाख रुपये छात्रवृत्ति के रूप में वितरित किये गये।

19. परीक्षा परिणाम : संस्थान की कक्षा छठी से आठवीं तक की परीक्षाएँ संस्थान द्वारा आयोजित की गईं जबकि पूर्वमध्यमा से आचार्य तक की परीक्षाएँ सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा संचालित की गईं। परीक्षा परिणाम 82.67% प्रतिशत रहा। वर्ष 2013-14 सत्र के अन्तर्गत प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या — पर परिशिष्ट के रूप में है।

कनिष्ठ छात्रों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए प्रति वर्ष मई, अगस्त और नवम्बर में क्रमशः त्रैमासिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षाएँ आयोजित करने के लिए संस्थान द्वारा आवश्यक प्रबंध किये गये हैं।

20. गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय : अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु यह संस्थान विभिन्न गोनपाओं में 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय चला रहा है जो इस प्रदेश में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ये विद्यालय सम्बन्धित गोनपाओं के सहयोग से चलाये जा रहे हैं। तदनुसार उक्त गोनपा कक्षाओं एवं छात्रावास की सुविधाओं के साथ-साथ धार्मिक विधियों की शिक्षा प्रदान करते हैं। संस्थान की ओर से प्रवेश प्राप्त छात्रों की संख्या के आधार पर विद्यार्थियों के लिए एक से तीन शिक्षकों की व्यवस्था की जाती है। इस के अतिरिक्त साज-सामान, लेखन-सामग्री, पाठ्यपुस्तक एवं कापी और प्रति विद्यार्थी के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जाती है। संस्थान द्वारा नियुक्त शिक्षक विद्यार्थियों को गोनपा-विषयक शिक्षा के साथ-साथ अन्य आधुनिक प्रारम्भिक शिक्षा, जैसे - भोटी भाषा, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि की शिक्षा प्रदान करते हैं। प्राप्त विवरण के अनुसार विगत वर्ष लदाख के विभिन्न गोनपाओं में स्थापित 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों में कुल 921 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। वर्ष 2013-14 के विद्यार्थियों के नामांकन का विवरण विद्यालयवत् एवं कक्षावार पृष्ठ संख्या — पर परिशिष्ट के रूप में है।

21. वार्षिकोत्सव: संस्थान के 53 वें वार्षिकोत्सव का आयोजन 6 नवम्बर 2013 को संस्थान के परिसर में पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। इस उत्सव में संस्थान की परीक्षाओं में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले तथा संस्थान की विभिन्न प्रतियोगिताओं, यथा - निबंध प्रतियोगिता, कविता-आवृत्ति प्रतियोगिता, व्याख्यान प्रतियोगिता, खेलकूद गतिविधि, सांस्कृतिक गतिविधि, प्रश्नमंच इत्यादि में भाग लेने वाले विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। डॉ. तोनडुब छेवड, अध्यक्ष, लदाख बौद्धसंघ उक्त समारोह की मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे तथा उन्होंने प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये। इस अवसर पर संस्थान के विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन किया। संस्थान के अध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के अतिरिक्त लदाख के अनेक विद्वान एवं अतिथि भी उक्त समारोह में उपस्थित थे। यह समारोह राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ।

22. अन्य महत्वपूर्ण घटनायें :

प्राप्त विवरण के अनुसार विगत वर्ष संस्थान में निम्नलिखित उत्सव एवं कार्य-कलापों का बड़े उत्साह के साथ आयोजन किया गया:

(क) भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म-दिवस :

दिनांक 14 अप्रैल 2013 को डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 123 वीं जयन्ती मनाई गई। अनेक विद्वानों एवं विद्यार्थियों ने इस समारोह में भाग लिया और उनकी जीवनी एवं उपलब्धि पर प्रकाश डाला। डॉ. सी.पी. वर्मा, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

(ख) डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती, अध्यापक दिवस :

संस्थान ने दिनांक 5 सितम्बर 2013 को भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती अध्यापक दिवस के रूप में मनाई। इस अवसर पर अध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने डॉ. राधाकृष्णन के जीवन और उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। अध्यापकों ने विद्यार्थियों द्वारा डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षाओं का अनुपालन करने तथा अपने जीवन में कार्यान्वित करने के लिए बल दिया।

(ग) हिन्दी दिवस : संस्थान ने सितम्बर मास में हिन्दी दिवस मनाया, जिसमें हिन्दी में विभिन्न प्रकार की साहित्यिक प्रतियोगितायों का संचालन किया गया, जैसे निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता तथा व्याख्यान प्रतियोगिता आदि। इस में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कारों से सम्मनित किया गया। इस के अतिरिक्त विद्वानों ने हिन्दी भाषा के महत्व पर व्याख्यान दिया।

(घ) लदाख के बौद्ध मठों द्वारा मन्त्र पाठ, एक सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर : युनेस्को (UNESCO) ने सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर की सूची स्थापित की है। इस का उद्देश्य महत्वपूर्ण विश्वव्यापी सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर का उत्तम संरक्षण तथा उनके महत्व की जागरूकता को सुनिश्चित करना है। सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर की सूची के कार्यक्रम का प्रारंभ सूक्ष्म धरोहर सुरक्षा के महत्व की ओर ध्यान अंकित करने के लक्ष्य के साथ हुआ जिन को युनेस्को (UNESCO) द्वारा सारभूत अंग एवं सांस्कृतिक भिन्नता का एक पात्र और रचनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में चिह्नित किया गया है। इस सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर को जीवित धरोहर भी कहा जाता है, अर्थात् व्यावहारिक रूप के प्रतीक, अभिव्यक्ति, ज्ञान, एक व्यक्ति का कौशल तथा उपकरण, वस्तुएं, शिल्पतथ्य और सांस्कृतिक अन्तरिक्ष इन के साथ सम्बद्ध है जिन को सम्पूर्ण समाज/समुदाय/व्यक्ति उनकी अपनी सांस्कृतिक धरोहर के भाग के रूप में मान्यता देते हैं। इस प्रकार आई.सी.एच. निम्न किसी भी क्षेत्र में भी प्रकट किया जा सकता है—मौखिक परम्परा तथा भाषा की अभिव्यक्ति, पालन करने वाली कला। सामाजिक प्रथा, कर्मकाण्ड एवं त्यौहार, प्रकृति एवं सम्पूर्ण विश्व तथा पारम्परिक शिल्प-कौशल सुरक्षित रखने का ज्ञान और अनुष्ठान। तदनुसार सांस्कृतिक मंत्रालय, भारत सरकार ने लदाख के बौद्ध मठों द्वारा मन्त्र पाठ को युनेस्को (UNESCO) की प्रतिनिधि सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर की सूची (द्वितीय दायरा) में उल्लिखित करने के लिए नामांकन फाइल तैयार करने का काम संस्थान को सौंपा। संस्थान ने नामांकन फाइल 60 मिनट अवधि के प्रलेख

पोषण श्रव्यदृष्टि तथा अंग्रेजी में 10 मिनट अवधि वाले छोटे रूपान्तर आंगुलिक चलचित्र (डिजिटल विड्यू) रूप में तैयार किया है और उसे मॉडल अे'जॅन्स अइ.जी. एन.सी.ए. के माध्यम से युनेस्को (UNESCO) के सामने प्रस्तुत किया है। युनेस्को (UNESCO) ने लदाख के बौद्ध मठों द्वारा मन्त्र पाठ को चुना। वर्ष 2012 में समस्त हिमालय के लदाख क्षेत्र में स्थित बौद्ध पवित्र ग्रन्थों के पाठ को मानवता की सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर की सूची में सम्मिलित किया।

लदाख के बौद्ध मठों द्वारा किये गये मन्त्र पाठ में निम्नगोनपाओं का मन्त्र पाठ समाविष्ट है:

| <u>क्रमिक संख्या</u> | <u>गोनपा का नाम</u> | <u>आलाप की विषयवस्तु</u> |
|----------------------|---------------------|--------------------------|
| 1. | हेमिस गोनपा | रिगमा चुटुग |
| 2. | ठिगसे गोनपा | शरकंगरिमा |
| 3. | स्पितुग गोनपा | नस्-तन् |
| 4. | पयांग गोनपा | चोत् |
| 5. | माठो गोनपा | कुनरिग |

23. अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्तियों का आगमन :

(क) श्रीमती संगीता गैरौला, सचिव, भारत सरकार : दिनांक 15-05-2013 से 18-05-2013 तक श्रीमती संगीता गैरौला, सचिव, भारत सरकार ने लेह का दौरा किया। संस्थान ने श्रीमती संगीता गैरौला जी के उपलक्ष्य में दिनांक 18 मई को स्वागत समारोह का प्रबन्ध किया।

(ख) श्री रविन्द्र सिंह, विशेष सचिव (वर्तमान सचिव) : श्री रविन्द्र सिंह, विशेष सचिव ने 6 जून 2013 को संस्थान का दौरा किया। उन्होंने हिमालय की परम्परागत कला तथा संस्कृति विभाग अर्थात् भोट चिकित्सा, पारम्परिक थंका/चित्रकला, पारम्परिक मूर्ति-कला और काष्ठकला का निरीक्षण किया और वे परम्परागत कला तथा संस्कृति के संरक्षण से बहुत प्रभावित हुए।

(ग) श्री खन्ना, संसद सदस्य (राज्य सभा) : दिनांक 28 जून 2013 को श्री खन्ना, संसद सदस्य (राज्य सभा) ने संस्थान का दौरा किया। उन्होंने विद्यार्थियों और कर्मचारियों को जल साधन संरक्षण पर व्याख्यान दिया।

(घ) श्रीमती सुषमा दबक, डी. जी. (लेखापरीक्षा) : दिनांक 4 जुलाई 2013 को श्रीमती सुषमा दबक, लेखा परीक्षा महा निदेशक ने संस्थान का दौरा किया।

(ड) वज़ाहत हबीबुल्ला, अध्यक्ष, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग :

दिनांक 6 सितम्बर 2013 को संस्थान ने माननीय श्री. वज़ाहत हबीबुल्लाह, अध्यक्ष, अल्पसंख्यक राष्ट्रीय आयोग, भारत सरकार, श्री छेरिंग नमग्यल शुनु, सदस्य, अल्पसंख्यक राष्ट्रीय आयोग और श्री सुरजीत चौधरी, सचिव, अल्पसंख्यक राष्ट्रीय आयोग के उपलक्ष्य में स्वागत समारोह का प्रबन्ध किया। उन्होंने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को विश्वविद्यालय घोषित करने हेतु विस्तार में विचार विमर्श किया। उन्होंने इस मामले को उचित अधिकारीगण तक ले जाने और शीघ्र क्रियान्वयन कराने के लिए प्रयत्न करने का वादा किया। यह दल संस्थान के शैक्षणिक एवं भौतिक संरचना से प्रभावित हुआ।

24. हिमालयी बौद्ध-संस्कृति-विश्व-कोश के संकलन का आरम्भ :

संस्थान की प्रबन्ध-समिति ने प्रो. रमेश चन्द्र तिवारी की देख-रेख में हिमालयी बौद्ध-संस्कृति-विश्व कोश के निर्माण की परियोजना का अनुमोदन किया है। परियोजना का कार्य पाँच वर्ष का है एवं 10 भागों में विश्वकोश तैयार करने की योजना है। विद्वानों को अनुबन्ध के आधार पर नियुक्त कर परियोजना का कार्यारम्भ हो चुका है। उक्त योजना मुख्य सम्पादक के निरीक्षण में दो सम्पादक एवं तीन शोध-सहायक के सहयोग से प्रगति पर है। प्राप्त विवरण के अनुसार इस सत्र के दौरान संस्थान ने इस विश्व कोश के दो खण्ड को प्रकाशित किये जो लदाख क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। अन्य खण्डों का काम प्रगति पर है। दिनांक 19-12-2011 को हुई केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबंधकारिणी की बैठक में इस परियोजना के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसकी अवधि अगले पाँच साल के लिए बढ़ा दी गई है।

25. विदेशी विद्यार्थियों के लिए शिक्षा की व्यवस्था : संस्थान ने विदेशी विद्यार्थियों के लिए वरिष्ठ संकाय सदस्यों को नियुक्तकर एक सप्ताह बौद्धदर्शन, विधि तथा समाधि पाठक्रम का प्रबन्ध किया। इस में दुनियाँ के विभिन्न देशों से 30 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस दौरान वरिष्ठ संकाय सदस्यों द्वारा शिक्षा प्रदान करने के बाद विस्तार से चर्चा हुई, जो विदेशी विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक रही। उन्होंने भविष्य में इस प्रकार के कार्यक्रमों का प्रबन्ध करने का माँग की।

26. पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र :

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र के रूप में लदाख क्षेत्र के लिए "पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र" पद प्रदान किया है। तदनुसार संस्थान ने अनुबन्ध के आधार पर विद्वानों की नियुक्ति कर उन्हें काम सौंपा है। वर्तमान में पाँच कुशाग्रबुद्धि कर्मचारी इस योजना पर मार्च से नवम्बर तक काम कर रहे हैं। उक्त योजना के प्रलेख पोषण का काम सख्त ठण्ड मौसम के कारण दिसम्बर से फरवरी तक तीन महीने के लिए बन्द रहता है। संस्थान ने लदाख क्षेत्र के 1714 मठों, महलों एवं व्यक्तियों से लगभग 25,253 पाण्डुलिपियों का संग्रह किया है तथा प्रयास है कि इस क्षेत्र में उपलब्ध सभी पाण्डुलिपियों का संग्रह किया जा सके। इसके अतिरिक्त संस्थान लदाख क्षेत्र के विभिन्न विहारों में उपलब्ध दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संरक्षण भी करता है। अब तक 12,253 पन्नों का संरक्षण किया जा चुका है।

27. उपाधि / उपाधि-पत्र प्राप्त करने के बाद छात्रों की नियुक्ति : संस्थान पी-एच. डी. (विद्यावारिधि) उपाधि, भोट बौद्ध दर्शन, संस्कृत बौद्ध दर्शन, बौद्ध पुराणेतिहास इतिहास, भोट साहित्य तथा तुलनात्मक दर्शन विषयों में आचार्य (एम.ए. से समकक्षता), शास्त्री (बी.ए. से समकक्षता), उत्तर मध्यमा (+2 से समकक्षता) और पूर्वमध्यमा (मैट्रिक से समकक्षता) का उपाधि प्रदान करता है। इस के अतिरिक्त भोट चिकित्सा, थंका/चित्रकला, मूर्ति-कला और काष्ठकला में भी छः वर्ष के उपाधि दी जाती है। यह अवलोकन किया गया है कि जिन विद्यार्थियों ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से ऊपर बताये गये पाठ्यक्रमों में उपाधि प्राप्त की है वे बेरोजगार नहीं हैं। जिन विद्यार्थियों ने इस संस्थान से उपाधि प्राप्त की है वे विशेषकर शिक्षा विभाग, जम्मूकश्मीर, केन्द्रीय विद्या, नवोदय विद्यालय, और निजी स्कूलों में आसानी से नियुक्त हो जाते हैं। जिन उम्मीदवारों के पास ऊपर की उपाधियाँ हों उन्हें आकाशवाणी और दूरदर्शन विभागों में नियुक्त होने का अच्छा अवसर है क्योंकि इन विभागों में उन उम्मीदवारों को वरीयता देते हैं जिन को स्थानीय भाषा का अच्छा ज्ञान हो। संस्थान गर्व महसूस करता है कि केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान का पूर्व छात्र कश्मीर प्रशासनिक सेवा और संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से भर्ती होकर राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार के कार्यालयों में अच्छे स्थानों पर विराजमान है। जम्मू एवं कश्मीर उच्च न्यायालय में प्रथम लदाखी न्यायाधीश के रूप में जिनकी नियुक्त हुई है, उन्होंने उत्तर मध्यमा तक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह में अध्ययन किया है। इस के अतिरिक्त संस्थान के पूर्व छात्र पूरे भारत में सेना और अर्ध सैनिक बलों में देश के लिए सेवा कर रहे हैं। संस्थान के कुछ पूर्व छात्र विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन कलकत्ता, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली आदि प्रख्यात विश्वविद्यालयों में काम कर रहे हैं। जम्मू और कश्मीर के पुलिस विभाग में अनेक ऐसे अधिकारी हैं जिन्होंने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से उपाधि प्राप्त की है। के.बो.वि.सं., लेह की शाखा और फीडर स्कूल केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के पूर्व छात्रों को नियुक्त कर चलाये जा रहे हैं, जो इस क्षेत्र की संस्कृति और विरासत के संरक्षण तथा पदोन्नति के लिए उपयोगी है।

भोट चिकित्सा में उपाधि प्राप्त विद्यार्थी केन्द्र प्रायोजित योजना 'राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन' के अधीन राज्य के स्वास्थ्य विभाग में काम में लगा है, जो पूरे क्षेत्र में ग्रामीण मरीजों को देखता है। थंका/चित्रकला, मूर्ति-कला और काष्ठकला में उपाधि प्राप्त विद्यार्थी स्थानीय लोग तथा लदाख में आये पर्यटकों से थंका, मूर्ति और लकड़ी पर नक्काशी का काम करके अच्छी खासी धनराशि कमा रहे हैं। इस के अतिरिक्त जिन उम्मीदवारों ने ऊपर बतायी बयी उपाधियाँ प्राप्त की हों वे उन संस्थाओं में प्रशिक्षक के रूप में नियुक्त होते हैं, जहाँ पर समान पाठ्यक्रम हो।

इस प्रकार हजारों विद्यार्थियों ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से उपाधियाँ प्राप्त की है और उन में से कोई भी बेरोजगार नहीं है। यह केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की एक महान् उपलब्धि है।

28. डुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार :

(क) संक्षिप्त इतिहास—जंस्कार बौद्ध संघ के निमन्त्रण पर सन् 1980 में पहली बार परम पावन दलाई लामा जी जंस्कार पधारे थे। उन्होंने इस क्षेत्र की संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता का अनुभव

करते हुए एक विद्यालय की स्थापना के लिए जंस्कार बौद्ध संघ को कुछ धनराशि भेंट की। जंस्कार बौद्ध संघ ने इस क्षेत्र के निर्धन एवं जरूरतमंद छात्रों के कल्याण के लिए सितम्बर वर्ष 1984 में डुजिंग फोटंग में एक विद्यालय की स्थापना की। यहाँ प्रारंभ में कुल 101 छात्रों को प्रवेश दिया गया तथा तीन अध्यापकों को नियुक्त किया गया। दूर-दराज के क्षेत्रों के छात्रों के लिए एक छात्रावास का प्रबंध भी किया गया। जंस्कार के बौद्ध निवासियों ने भी इस विद्यालय के कोष के लिए धन जुटाया। परम पूज्य दलाई लामा जी ने वर्ष 1988 में दूसरी बार जंस्कार पधारने पर विद्यालय के विकास के लिए पुनः धनराशि भेंट की। जंस्कार बौद्ध संघ और क्षेत्र की जनता ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी को इस विद्यालय के महत्व के बारे में अवगत कराया तथा उनसे निवेदन किया कि केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की तरह इस विद्यालय का प्रबंधन भारत सरकार अपने अधीन कर ले। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने मार्च/अप्रैल 1988 में अपनी जंस्कार यात्रा के दौरान वहाँ के नागरिकों की भावनाओं का समादर करते हुए "डुजिंग फोटंग विद्यालय" को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से सम्बद्ध करने की घोषणा की थी। तदनुसार भारत सरकार ने नवम्बर, 1989 से इस विद्यालय को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की शाखा के रूप में मान्यता प्रदान कर दी। तब से यह विद्यालय केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के वित्तीय एवं प्रशासनिक नियन्त्रण में चलाया जा रहा है। वर्तमान में इस विद्यालय में प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक कुल 253 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। डुजिंग फोटंग विद्यालय के नये शैक्षिक विभाग का निर्माण कार्य लोक निर्माण विभाग, करगिल को सौंपा गया था। उक्त विभाग ने सितम्बर 2004 को शैक्षिक विभाग का निर्माण कार्य सम्पन्न कर संस्थान को वह भवन 23 सितम्बर 2004 को सौंप दिया। तदनुसार उसी दिन से वहाँ की कक्षाएं नये शैक्षिक भवन में चल रहा है। कर्मचारी आवास का निर्माण कार्य भी पूर्ण हो चुका है और आवसों को कर्मचारियों में आवंटित किया गया। छात्रावास भवन का निर्माण कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है और सौंपने के लिए तैयार है। एक छोटे बहुउपयोगी सभा भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

(ख) परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस.,जंस्कार) : डुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार के कक्षा पहली से आठवी तक के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षाएँ प्रधानाध्यापक के निरीक्षण में संस्थान द्वारा अयोजित की गईं। कक्षा नवीं तथा दसवीं के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षाएँ के.बौ.वि.सं. लेह, के माध्यम से सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा संचालित की गईं। वहाँ के विद्यार्थियों को परीक्षा के लिए लेह आना पड़ता था और अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। अतः इन बातों को ध्यान में रखकर वहाँ एक परीक्षा केन्द्र स्थापित किया गया। वर्ष 2013-2014 सत्र के अर्न्तगत विद्यार्थियों के नामांकन और प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या — पर परिशिष्ट के रूप में है।

(ग) अन्य क्रिया-कलाप(डी.पी.एस.,जंस्कार) : यह स्कूल विविध शैक्षिक क्रिया-कलापों का आयोजन कर रहा है, जैसे – वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता, साहित्यिक प्रतियोगिता, ऐतिहासिक स्थलों/विहारों का दर्शन, राष्ट्रीय स्तर के महापुरुषों का जन्म दिवस मनाना, मासिक व्याख्यान प्रतियोगिता आदि। इसके

अतिरिक्त इस स्कूल में एक छोटा सा ग्रन्थालय है जहाँ विद्यार्थियों के लिए ग्रन्थों का एक अच्छा संग्रह उपलब्ध है।

(घ) कर्मचारी संख्या—प्राप्त विवरण अनुसार डुजिंग फोटंग विद्यालय के कर्मचारियों की संख्या पृष्ठ संख्या — पर परिशिष्ट के रूप में है।

27. बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग, जिला लाहुल व स्पीति (हि.प्र.)

(क) संक्षिप्त इतिहास : हिमालय क्षेत्र क्रमशः लाहुल, स्पीति, किन्नौर, पंगी, कुल्लू और मनाली की बहुमूल्य बौद्ध कला, भाषा और संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग, लाहुल-स्पीती (हि.प्र.) की स्थापना सन् 1976 में हुई। सन् 1959 से पूर्व इस क्षेत्र के विद्वान, श्रामणेर एवं भिक्षु उच्च बौद्ध शिक्षा के लिए तिब्बत जाते थे। परन्तु 1959 की ऐतिहासिक घटना के परिणामस्वरूप अचानक इस परम्परा में व्यवधान पैदा हुआ। अतः नवशिष्यों को पारम्परिक बौद्ध शिक्षा देने के लिए बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग अस्तित्व में आया। आरम्भ में यह विद्यालय यहाँ के निवासियों से धन जुटाकर चलाया जाता था। तत्पश्चात् भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने बौद्ध/तिब्बती संस्था विकास के वित्त सहयोग योजना के अन्तर्गत कुछ वित्तीय सहयोग दिया। इस क्षेत्र के लोगों ने इस विद्यालय को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह और केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी की प्रणाली के अनुसार भारत सरकार की एक स्वायत्त संस्था के रूप में प्रभार लेने के अथक प्रयास किये। परन्तु यह भारत सरकार के संस्कृति मन्त्रालय की एक स्वायत्त संस्था के रूप में प्रभार नहीं ले सका।

तथापि वर्तमान में, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबन्धकारिणी की संस्तुति के आधार पर इस विद्यालय को डुजिंग फोटंग विद्यालय (डी.पी.एस.) जंस्कार के समान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के शाखा विद्यालय के रूप में अपने अधीन लेने का निर्णय लिया है। तदनुसार संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के पत्र सं० एफ./1-11/2004-बी.टी.आई. दिनांक 05-03-2010 के अनुसार बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग (हि.प्र.) को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह ने अपनी शाखा के रूप में ले लिया है। तब से इस विद्यालय के प्रशासन को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा चलाया जाता है।

वर्तमान में, इस विद्यालय में, कक्षा प्रथम से दसवीं कक्षा तक 46 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा अपने शाखा विद्यालय के रूप में लेने के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने की सम्भावना है। यह विद्यालय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध है और विद्यार्थियों की परीक्षा का आयोजन उक्त विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है। इस विद्यालय में एक प्रधानाध्यापक, छः प्रशिक्षित स्नातक, एक भोटी अध्यापक, एक बौद्ध दर्शन का अध्यापक, एक कार्यालय सहायक और तीन चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कार्यरत हैं।

कक्षाओं को चलाने के लिए विद्यालय के अपने भवन हैं और दुर्गम क्षेत्र से आये विद्यार्थियों के लिए एक छात्रावास भी है। डुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार के समान इस विद्यालय के कर्मचारियों का

वेतन, छात्रों की छात्रवृत्ति, साज-सामान और दिन-प्रति दिन का व्यय केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान,लेह द्वारा दिया जाता है।

(ख) परीक्षा का परिणाम (बी.डी.एस.वी., केलांग)

इस विद्यालय की छठी कक्षा से आठवीं कक्षा तक की वार्षिक परीक्षाएँ प्रधानाध्यापक के निरीक्षण में संस्थान द्वारा अयोजित की जाती हैं। कक्षा नवीं एवं दसवीं की वार्षिक परीक्षा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा अयोजित की जाती है, जिससे की यह विद्यालय सम्बद्ध है। वर्ष 2013-2014 सत्र के अर्न्तगत विद्यार्थियों के नामांकन और प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या — पर परिशिष्ट के रूप में है।

(ग) कर्मचारी संख्या :

बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग जिला लाहुल व स्पीति (हि.प्र.) के कर्मचारी संख्या पृष्ठ संख्या — पर परिशिष्ट के रूप में है।

परिशिष्ट

के.बौ.वि.सं. लेह के प्रबन्धक समिति की संरचना:

| क्र.सं. | नाम और पता | पद |
|---------|--|-----------------------------|
| 1. | श्रीमती अरविन्द मंजीत सिंह संयुक्त सचिव, संस्कृति विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली | अध्यक्ष |
| 2. | श्री सिरनदीप सिंह जिला उपायुक्त, लेह | उपाध्यक्ष |
| 3. | प्रो. रमेश कुमार द्विवेदी सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति द्वारा मनोनीत प्रतिनिधि जिससे संस्थान सम्बद्ध है | सदस्य |
| 4. | श्रीमती महालक्ष्मी रामकृष्ण निदेशक (वित्त) संस्कृति विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली | सदस्य |
| 5. | भारत सरकार के विदेशमंत्रालय के प्रतिनिधि | सदस्य (भूतपूर्व अधिकारी) |
| 6. | भारत सरकार के शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि | सदस्य (भूतपूर्व अधिकारी) |
| 7. | मुख्य शिक्षा पदाधिकारी, लेह जम्मू-कश्मीर सरकार के शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि | सदस्य |
| 8. | गेशे कोनछोग नमग्यल, अध्यक्ष, लदाख गोनपा संघ, लेह (लदाख गोनपा संघ के प्रतिनिधि) | सदस्य |

9. डॉ. तोनडुब छेवड,
अध्यक्ष, लदाख बौद्ध संघ, लेह
(लदाख बौद्ध संघ के प्रतिनिधि) सदस्य
- 10-12 भारत सरकार द्वारा मनोनीत तीन बौद्ध विद्वान
- (क) प्रो. नवांग समतेन, कुलपति,
केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, वाराणसी सदस्य
- (ख) डॉ. रवीन्द्र पन्त,
निदेशक, नव नलन्दा महाविहार सदस्य
- (ग) भिक्षु विमलतिस,
गाँव चोंगखम, पी.ओ.चोंगखम
जिला लोहित, अरुणाचल प्रदेश सदस्य
13. प्रे. कोनछोग वंगदु,
प्रो. बौद्ध दर्शन, के.बौ.वि.सं.,लेह
(कर्मचारी प्रतिनिधि) सदस्य
14. डॉ. वंगछुग दोर्जे नेगी,
निदेशक
केन्द्र बौद्ध विद्या संस्थान, लेह सदस्य सचिव

| शिक्षा समिति की संरचना : | | परिशिष्ट |
|--------------------------|---|------------|
| क्र.सं. | नाम और पता | पद |
| 1. | प्रो. येशे थबखस, केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ | अध्यक्ष |
| 2-5 | लदाख में स्थित चार महायान सम्प्रदायों के प्रतिनिधि (1) प्रो. जमयङ्ग ग्यलछेन (2) डॉ. उर्ज़न डादुल (3) खनछेन छेवंग रिगज़ीन (4) प्रो. कोनछोक वंगदु | सदस्य |
| 6. | प्रो० सत्यपाल, अध्यक्ष, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली | सदस्य |
| 7. | प्रो. आर.के.द्विवेदी, अध्यक्ष बौद्ध दर्शन विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी | सदस्य |
| 8. | प्रो. बी. एन. लाभ अध्यक्ष, बौद्ध अध्ययन विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, | सदस्य |
| 9. | प्रो. सोनम ग्याछो, केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ | सदस्य |
| 9. | डॉ. टशी पलजोर मैत्री निवास, भजोगी मनाली, जिलाकुल्लू (हि.प्र.) | सदस्य |
| 10. | डॉ. , वंगछुग दोर्जे नेगी, निदेशक, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह | सदस्य-सचिव |

| वित्त समिति की संरचना : | | परिशिष्ट |
|-------------------------|--|------------|
| क्र.सं. | नाम और पता | पद |
| 1. | श्रीमती महालक्ष्मी रामकृष्ण निदेशक (वित्त), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली | अध्यक्ष |
| 2. | श्री स्वराज कुमार आर्य उपायुक्त, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली | सदस्य |
| 3. | डॉ० वंगछुग दोर्जे नेगी, निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह | सदस्य |
| 4. | श्री छेरिंग मुटुप, प्रशासनिक अधिकारी, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह | सदस्य-सचिव |

परिशिष्ट

प्रकाशन समिति की संरचना :

| क्र.सं. | नाम और पता | पद |
|---------|---|------------|
| 1. | डॉ० वंगछुग दोर्जे नेगी, निदेशक, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह | अध्यक्ष |
| 2. | डॉ० पद्माकर मिश्रा, प्रकाशन प्रभारी, सं. सं. विश्वविद्यालय, वाराणसी | सदस्य |
| 3. | मुख्य सम्पादक, अनुवाद विभाग केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी | सदस्य |
| 4. | खनपो कोनछोग फनदे, लेह-लद्दाख | सदस्य |
| 5. | डॉ० लोबजंग छेवंग, प्रो. तुलनात्मक दर्शन, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह | सदस्य |
| 6. | श्री छेरिंग मुटुप, प्रशासनिक अधिकारी, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह | सदस्य-सचिव |

परिशिष्ट

ग्रन्थालय समिति की संरचना :

| क्र.सं. | नाम और पता | पद |
|---------|--|------------|
| 1. | डॉ० वंगछुग दोर्जे नेगी, निदेशक, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह | अध्यक्ष |
| 2. | पुस्तकालयाध्यक्ष, जिला पुस्तकालय, लेह | सदस्य |
| 3. | डॉ. टशी समफेल निदेशक, स्रोडचन पुस्तकालय, पी. ओ. कुलान, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून | सदस्य |
| 4. | भिक्षु लगदोर, निदेशक, तिब्बती पुस्तकालय एवं अभिलेख, धर्मशाला (हि.प्र.) | |
| 5. | श्रीमती छेवांग डोलमा, पुस्तकालय एवं सूचनाधिकारी, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह | सदस्य-सचिव |

शोध समिति की संरचना :

| क्र.सं. | नाम और पता | पद |
|---------|---|-----------|
| 1. | प्रो. आर. के. द्विवेदी, अध्यक्ष, बौद्ध दर्शन विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी | अध्यक्ष |
| 2. | प्रो. प्रद्युम्न दुबे, पालि एवं बौद्ध अध्ययन बी. एच. यू. वाराणसी | सदस्य |
| 3. | डॉ. हीरापाल गंग नेगी, असोशिएट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली | सदस्य |
| 4. | प्रो. जमयंग ग्यलछन प्राध्यापक, भोट साहित्य के. बी. वि. संस्थान, लेह | सदस्य |
| 5. | डॉ० एल. एन. शास्त्री, मुख्य सम्पादक, केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी (उ०प्र०) | सदस्य |
| 6. | डॉ० वंगछुग दोर्जे नेगी, निदेशक, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह | सदस्य—सचि |

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के कर्मचारियों की कोटि-वार संख्या :

क. शैक्षणिक पद

| क्र.सं. | पद का नाम | वेतनमान | स्वीकृत पद | भरे गये | रिक्त पद |
|---------|---------------------|-------------------|------------|---------|----------|
| 1. | निदेशक | 37400-6700+10000 | 01 | 01 | — |
| 2. | प्रोफेसर/आचार्य | 37,400-67000+8900 | 04 | 03 | 01 |
| 3. | उपाचार्य | 15,600-39100+7600 | 10 | 07 | 03 |
| 4. | प्राध्यापक | 15600-39100+5400 | 23 | 23 | — |
| 5. | प्रशिक्षक, शिल्पकला | 15600-39100+5400 | 01 | 01 | — |
| 6. | प्रशिक्षित स्नातक | 9300-34800+4600 | 12 | 11 | 01 |
| 7. | प्रशिक्षक, काष्ठकला | 5200-20200+2800 | 01 | 01 | — |
| 8. | अध्यापक, गो. वि. | 5200-20200+2800 | 100 | 89 | 11 |

ख. प्रशासनिक पद

| | | | | | |
|-----|-------------------|------------------|---|---|---|
| 1. | प्रशासनिक अधिकारी | 15600-39100+6600 | 1 | 1 | — |
| 2. | अति०प्र. अधिकारी | 15600-39100+6600 | 1 | | 1 |
| 3. | अधीक्षक | 9300-34800+4200 | 1 | — | 1 |
| 4. | लेखाकार | 9300-34800+4200 | 1 | 1 | — |
| 5. | मेडिकल सुपरवाइजर | 9300-34800+4200 | 1 | 1 | — |
| 6. | निजी सहायक | 9300-34800+4200 | 1 | 1 | — |
| 7. | मुख्य सहायक | 9300-34800+4200 | 1 | 1 | — |
| 8. | आशुलिपिक | 5200-20200+2800 | 1 | 1 | — |
| 9. | कार्यालय सहायक | 5200-20200+2400 | 4 | 4 | — |
| 10. | रोकड़िया | 5200-20200+2400 | 1 | 1 | — |
| 11. | भण्डारक | 5200-20200+2400 | 1 | 1 | — |
| 12. | एल.डी.सी | 5200-20200+1900 | 1 | 1 | — |
| 13. | पम्प चालक | 5200-20200+2400 | 1 | 1 | — |
| 14. | गाड़ी चालक | 5200-20200+2400 | 2 | 2 | — |
| 15. | गार्ड कमांडर | 5200-20200+2400 | 1 | 1 | — |
| 16. | वरिष्ठ चौकीदार | 5200-20200+1900 | 1 | 1 | — |
| 17. | चौकीदार | 4440-7440+1300 | 4 | 4 | — |
| 18. | जमादार | 4440-7440+1400 | 1 | 1 | — |

| | | | | | |
|-----|------------------|----------------|---|---|---|
| 19. | चपरासी | 4440-7440+1300 | 6 | 5 | 1 |
| 20. | छात्रावास रसोईया | 4440-7440+1300 | 4 | 3 | 1 |
| 21. | छात्रावास बैरा | 4440-7440+1300 | 1 | 1 | — |
| 22. | कैन्टीन बैरा | 4440-7440+1300 | 1 | 1 | — |
| 23. | माली | 4440-7440+1300 | 1 | 1 | — |
| 24. | सफाई कर्मचारी | 4440-7440+1300 | 3 | 3 | — |

ग. पुस्तकालय कर्मचारी

| | | | | | |
|-----|------------------------------|------------------|---|---|---|
| 25. | पुस्तकालय एवं सूचनाधिकारी | 15600-39100+5400 | 1 | 1 | — |
| 26. | सहायक सम्पादक/ सह सूचीकार | 9300-34800+4200 | 1 | 1 | — |
| 27. | पुस्तकालय सूचना सहायक | 9300-34800+4200 | 1 | 1 | — |
| 28. | पुस्तकालय-परिचारक | 4440-7440+1300 | 1 | 1 | — |

घ. शोध एकांश

| | | | | | |
|-----|-----------|------------------|---|---|---|
| 29. | शोधधिकारी | 15600-39100+5400 | 1 | 1 | — |
| 30. | अनुवादक | 9300-34800+4600 | 1 | 1 | — |

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के 2013-2014 सत्र के अन्तर्गत प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण :

| क्रम.स | कक्षा | छात्र संख्या | परीक्षा में प्रवेश | परीक्षा में उत्तीर्ण | उत्तीर्ण कुल छात्र का प्रतिशत |
|----------|-----------------------|--------------|--------------------|----------------------|-------------------------------|
| क. | विश्वविद्यालय कक्षाएँ | | | | |
| 1. | पूर्वमध्यमा प्रथम | 93 | 90 | 51 | 56.66% |
| 2. | पूर्वमध्यमा द्वितीय | 63 | 62 | 49 | 79.3% |
| 3. | उत्तरमध्यमा प्रथम | 101 | 100 | 68 | 68% |
| 4. | उत्तरमध्यमा द्वितीय | 92 | 92 | 88 | 95.65% |
| 5. | शास्त्री प्रथम | 06 | 406 | 06 | 100% |
| 6. | शास्त्री द्वितीय | 44 | 43 | 33 | 76.74% |
| 7. | शास्त्री तृतीय | 30 | 29 | 28 | 96.55% |
| 8. | आचार्य प्रथम | 09 | 09 | 09 | 100% |
| 9. | आचार्य द्वितीय | 08 | 06 | 06 | 100% |
| | कुल | 446 | 437 | 338 | 77.34% |
| ख. | पारम्परिक हिमालयन कला | | | | |
| 1. | काष्ठकला | 10 | 09 | 09 | 100% |
| 2. | मूर्तिकला | 18 | 18 | 18 | 100% |
| 3. | अमची | 32 | 26 | 23 | 88.46% |
| 4. | चित्रकला | 15 | 15 | 15 | 100% |
| | कुल | 75 | 68 | 65 | 95.58% |
| ग. | कनिष्ठ कक्षाएँ | | | | |
| 1. | छठी | 94 | 84 | 72 | 85.71% |
| 2. | सातवीं | 95 | 89 | 77 | 86.51% |
| 3. | आठवीं | 83 | 78 | 73 | 93.58% |
| | कुल | 272 | 251 | 222 | 88.44% |
| पूर्णयोग | क + ख + ग | 793 | 756 | 625 | 82.67% |

गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयवत् एवं कक्षावत् नामांकन का विवरण:

| क्र.सं. | गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय का नाम | कक्षावत् कुल नामांकन | | | | | | कुल शैक्षणिक पद |
|---------|---|----------------------|---------|-------|--------|------|-----|-----------------|
| | | प्रथम | द्वितीय | तृतीय | चतुर्थ | पंचम | योग | |
| 1. | हेमीस गोनपा विद्यालय, हेमीस, लेह | 04 | 06 | 17 | 14 | 17 | 58 | 4 |
| 2. | शचुकुल गोनपा विद्यालय, शचुकुल, चंगथंग, लेह | 07 | 04 | 05 | 10 | 05 | 31 | 3 |
| 3. | चेमडे गोनपा विद्यालय, चेमडे, लेह | 01 | 05 | 10 | 04 | . | 20 | 2 |
| 4. | अनले गोनपा विद्यालय, अनले, लेह | 02 | . | 06 | 05 | 06 | 19 | 2 |
| 5. | कर्मा डूपग्युद छोसलिंग गोनपा विद्यालय, चोगलमसर | 05 | 01 | 03 | 06 | 04 | 19 | 2 |
| 6. | लीकीर गोनपा विद्यालय, लीकीर, लेह | 01 | 02 | 06 | 07 | 03 | 19 | 2 |
| 7. | ठीकसे गोनपा विद्यालय, ठीकसे, लेह | 02 | 03 | 05 | 03 | . | 13 | 2 |
| 8. | सामस्तानलींग गोनपा विद्यालय, सामस्तानलींग, नूबरा, लेह | 03 | 02 | 02 | 04 | 06 | 17 | 2 |
| 9. | स्पीतुग गोनपा विद्यालय, स्पीतुग, लेह | 07 | 03 | 09 | 01 | 03 | 23 | 2 |
| 10. | फ्यांग गोनपा विद्यालय, फ्यांग, लेह | . | . | 02 | 07 | 07 | 16 | 2 |
| 11. | ग्युदजिन तान्त्रिक गोनपा विद्यालय, फे | 07 | 08 | . | . | . | 15 | 1 |
| 12. | मठो गोनपा विद्यालय, मठो, लेह | 01 | 03 | 02 | 01 | 02 | 09 | 1 |
| 13. | हनुथंग गोनपा विद्यालय | 02 | 02 | 01 | . | . | 05 | 2 |
| 14. | स्तगना गोनपा विद्यालय, स्तगना, लेह | 01 | . | 02 | 03 | 01 | 07 | 1 |
| 15. | स्क्थुरबनचन गोनपा विद्यालय, खलचे | . | 03 | 03 | . | . | 06 | 1 |
| 16. | मूद गोनपा स्कुल मूद, चंगथंग, लेह | . | 03 | . | 01 | 01 | 05 | 1 |
| 17. | न्योमा गोनपा विद्यालय, चंगथंग | 04 | . | 02 | 04 | 04 | 14 | 2 |
| 18. | छुशुल गोनपा विद्यालय, चंगथंग | 03 | 03 | . | 03 | 05 | 14 | 2 |
| 19. | रिजोंग गोनपा विद्यालय, रिजोंग, लेह | 08 | 04 | 06 | 04 | 01 | 23 | 2 |
| 20. | देस्कीद गोनपा विद्यालय, देस्कीद, नूबरा, लेह | 01 | . | 07 | 03 | 03 | 14 | 1 |
| 21. | यरमा गोनबो गोनपा विद्यालय, नुबरा | 02 | 03 | 03 | . | . | 08 | 1 |

| | | | | | | | | |
|-----|--|----|----|----|----|----|----|---|
| 22. | बरदन गोनपा विद्यालय, बरदन, जंस्कार, कारगील | 02 | 06 | . | 01 | 01 | 10 | 1 |
| 23. | कोरजोग गोनपा विद्यालय, चंगथंग | 04 | 03 | 04 | 04 | . | 15 | 2 |
| 24. | कारशा गोनपा विद्यालय, कारशा, जंस्कार, कारगील | 04 | 11 | 02 | 02 | . | 19 | 2 |
| 25. | लामायुरू गोनपा विद्यालय, लामायुरू, लेह | . | 03 | 06 | 04 | 05 | 18 | 2 |
| 26. | फूगथल गोनपा विद्यालय, फूगथल, जंस्कार, कारगील | 05 | 16 | 14 | . | 07 | 42 | 3 |
| 27. | रंगदुम गोनपा विद्यालय, जंस्कार | 08 | 07 | 05 | 01 | 03 | 24 | 2 |
| 28. | मुने गोनपा विद्यालय, जंस्कार | 01 | 03 | 03 | 01 | 03 | 11 | 1 |
| 29. | जोंगखुल गोनपा विद्यालय, जंस्कार | 04 | . | 01 | 05 | 03 | 13 | 1 |
| 30. | स्तोंगदे गोनपा विद्यालय, जंस्कार | . | 03 | . | 01 | 01 | 05 | 1 |
| 31. | स्तगरिमो गोनपा विद्यालय, जंस्कार | 07 | 05 | . | . | . | 12 | 1 |
| 32. | पलदार गोनपा विद्यालय, पलदार | 05 | 06 | 06 | 17 | 17 | 51 | 4 |
| 33. | की गोनपा विद्यालय, कजा, स्पीती | . | . | 08 | 05 | 06 | 19 | 2 |
| 34. | तनग्युद गोनपा विद्यालय, कजा, स्पीती | . | 12 | 12 | 12 | . | 36 | 3 |

श्रामणेरी विद्यालय

| | | | | | | | | |
|-----|--|------------|------------|------------|------------|------------|------------|-----------|
| 35. | तिमोसांग श्रामणेरी विद्यालय | — | — | — | 03 | 08 | 11 | 1 |
| 36. | स्किदमंगश्रामणेरी विद्यालय, स्किदमंग | 01 | 02 | 05 | 03 | 03 | 14 | 2 |
| 37. | चुलीचन श्रामणेरी विद्यालय, चुलीचान, लेह | 11 | 02 | 02 | 05 | 01 | 21 | 2 |
| 38. | बौद्धखरबु श्रामणेरी विद्यालय, बौद्धखरबु, कारगील | 01 | 01 | 03 | 01 | — | 06 | 1 |
| 39. | वाखा श्रामणेरी विद्यालय, वाखा, कारगील | — | 01 | 02 | 03 | 02 | 08 | 1 |
| 40. | शारगोल श्रामणेरी विद्यालय, शारगोल, कारगील | 07 | 01 | 02 | 03 | — | 13 | 2 |
| 41. | जंगला श्रामणेरी विद्यालय, जंगला, जंस्कार, कारगील | 01 | 01 | 02 | 02 | 03 | 09 | 1 |
| 42. | करशा श्रामणेरी विद्यालय, जंस्कार कारगील | 08 | 04 | 01 | — | 03 | 16 | 1 |
| 43. | टशी छोसलिंग श्रामणेरी विद्यालय, हि0 प्र0 | 08 | 06 | 06 | 04 | 2 | 26 | 2 |
| 44. | सक्या श्रामणेरी विद्यालय, चोगलमसर | 04 | — | 06 | 08 | 16 | 34 | 3 |
| 45. | यड्चेन् छोसलिङ् श्रामणेरी विद्यालय, स्पीती हि0 | 10 | — | 15 | 13 | — | 38 | 3 |
| 46. | तुडरि श्रामणेरी विद्यालय, जड्कर | 02 | 06 | 06 | 01 | 08 | 23 | 2 |
| 47. | दोर्गे जोङ् श्रामणेरी विद्यालय, | 19 | — | — | — | — | 19 | 2 |
| 48. | फगमो लिङ् श्रामणेरी विद्यालय, | 25 | — | — | — | — | 25 | 1 |
| 49. | देछेन छोलिङ् श्रामणेरी विद्यालय, | 25 | — | — | — | — | 25 | 2 |
| | कुल योग | 225 | 155 | 202 | 179 | 160 | 921 | 89 |

वर्ष 2013-2014 के परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस., जंस्कार) :

| क्र.सं. | कक्षा | छात्र संख्या | उपस्थित | परीक्षा में उत्तीर्ण | उत्तीर्ण प्रतिशत |
|---------|------------|--------------|------------|----------------------|------------------|
| 1. | प्रथम | 51 | 49 | 38 | 78% |
| 2. | द्वितीय | 23 | 23 | 20 | 87% |
| 3. | तृतीय | 31 | 29 | 26 | 90% |
| 4. | चतुर्थ | 33 | 30 | 27 | 90% |
| 5. | पांचवीं | 26 | 25 | 19 | 76% |
| 6. | छठी | 28 | 28 | 26 | 93% |
| 7. | सातवीं | 29 | 27 | 25 | 93% |
| 8. | आठवीं | 25 | 25 | 25 | 100% |
| 9. | नौवीं | 14 | 14 | 11 | 78.94% |
| 10. | दसवीं | 12 | 12 | 07 | 59.80% |
| | कुल | 272 | 262 | 224 | 85.49% |

डी.पी.एस., जंस्कार की कर्मचारी संख्या :

| क. | शैक्षिक कर्मचारी | वेतनमान | स्वीकृत पद | स्थिति | रिक्त पद |
|----|--|------------------|------------|--------|----------|
| 1. | प्रधानाध्यापक | 9300-34800+4800 | 1 | 1 | — |
| 2. | टी.जी.टी | 9300-34800+4200 | 7 | 7 | — |
| 3. | अध्यापक | 5200-20100+2800 | 5 | 5 | — |
| 4. | शारीरिक शिक्षा अध्यापक (अनुबन्ध पर) | 17,140 /=(स्थिर) | | 1 | |

| ख. | गैर शैक्षिक कर्मचारी | वेतनमान | स्वीकृत पद | स्थिति | रिक्त पद |
|----|-----------------------------|----------------|------------|--------|----------|
| | कार्यालय सहायक (अनुबन्ध पर) | 9,910 | — | 1 | — |
| 1. | रसोइया | 4440-7440+1300 | 1 | 1 | — |
| 2. | चपरासी | 4440-7440+1300 | 1 | 1 | — |
| 3. | गाड़ी चालक अनुबन्ध पर | 8510 /=(स्थिर) | — | 1 | — |
| 4. | माली | 4440-7440+1300 | 1 | 1 | — |
| 5. | चौकीदार | 4440-7440+1300 | 1 | 1 | — |

डुडु दरुन संसुकृत वलदुडुडु, कुलुंग कु वरुष 2013-2014 कु डरलकुषु कु डरलणुडु:

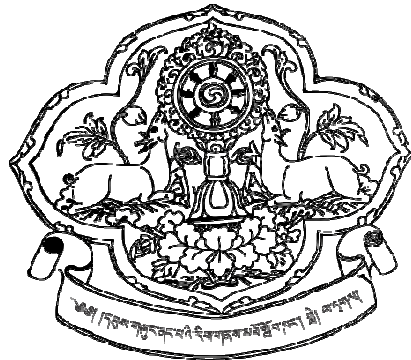
| कुर. सं. | ककुषु | कुषुतुर संखुडु | उडसुथलत | डरलकुषु डु उतुतुडरुण | उतुतुडरुण डुरतलशत |
|----------|-----------|----------------|---------|----------------------|-------------------|
| 1. | कुषुठवुडु | 6 | 6 | 6 | 100% |
| 2. | सुडुतवुडु | 6 | 6 | 6 | 100% |
| 3. | आठवुडु | 12 | 12 | 12 | 100% |
| 4. | नवुडु | 06 | 06 | 06 | 100% |
| 5. | दसवुडु | 07 | 07 | 06 | 85.71% |
| | कुल | 37 | 37 | 36 | 97% |

बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग की कर्मचारी संख्या :

| क. | शैक्षिक कर्मचारी | वेतनमान | स्वीकृत पद | स्थिति | रिक्त पद |
|----|------------------------|-----------------|------------|--------|----------|
| 1. | प्रधानाध्यापक | 9300-34800+4800 | 1 | 1 | - |
| 2. | टी.जी.टी | 9300-34800+4200 | 8 | 7 | 1 |
| 3. | शारीरिक शिक्षा अध्यापक | 9300-34800+4600 | 1 | 1 | - |

| ख. | गैर शैक्षिक कर्मचारी | वेतनमान | स्वीकृत पद | स्थिति | रिक्त पद |
|----|----------------------|-----------------|------------|--------|----------|
| 4. | कार्यालय सहायक | 5200-20200-2400 | 1 | 1 | - |
| 5. | चपरासी | 4440-7440+1300 | 3 | 3 | - |

Central Institute of Buddhist Studies



Annual Report
2011-2012

Choglamsar, Leh-Ladakh – 194101 (J&K)

INDEX

| <u>S.No.</u> | <u>Contents</u> | <u>Page No.</u> |
|--------------|--|-----------------|
| 1. | Brief History | 1 |
| 2. | Objectives | 2 |
| 3. | Management | 2 |
| 4. | Constitution of Sub-Committees | 3 |
| 5. | Funds | 4 |
| 6. | Staff Strength | 4 |
| 7. | Faculties and Departments | 4 |
| 8. | New Admission | 7 |
| 9. | Seminar/Symposium | 7 |
| 10. | Educational Tour | 8 |
| 11. | Publication | 9 |
| 12. | Research | 9 |
| 13. | Campus | 9 |
| 14. | Library | 10 |
| 15. | Museum | 10 |
| 16. | Special Lecture/Other Academic Activities | 10 |
| | i) K.G.Bakula Rinpoche Memorial Lecture Series | |
| | ii) Medical facilities | |
| | iii) Annual Sports Meet | |
| | iv) Annual Magazines: | |
| 17. | Syllabi | 12 |
| 18. | Stipend to Students | 12 |
| 19. | Examination Result | 13 |
| 20. | Gonpa/Nunnery School | 13 |
| 21. | Annual Function | 13 |
| 22. | Other Important Events | 14 |
| | i) Birth Anniversary of Bharat Ratna Dr.B.R. Ambedkar | |
| | ii) Visit of Shri V.Mohan, Principal Accountant General | |
| | iii) Visit of His Holiness Gyalwang Karmapa Rinpoche | |
| | iv) Visit of Prof.S.Rinpoche | |
| | v) Visit of Shri Wajahat Habibullah,Chairman, NCM | |
| | vi) Visit of Shri ANP Sinha, (OL) Secretary to the Govt of India,Ministry of Home Affairs | |
| 23. | Project of Compilation of Encyclopedia of Himalayan Buddhist Culture | 15 |
| 24. | Appointment of new faculty members | 15 |
| 25. | Manuscripts Resource Centre | 16 |

| | | |
|-----|--|----|
| 26. | (i) Duzin Photang School | 16 |
| | (ii) Examination Result (DPS, Zanskar) | |
| | (iii) Other Activities (DPS, Zanskar) | |
| 27. | (i) Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya,Keylong (H.P.) | 17 |
| | (ii) Examination Result of DBVS, Keylong | |
| | (iii) Staff Strength. | |
| 28. | Annexures | 20 |
| | i) Composition of Board of Management | |
| | ii) Composition of Academic Committee | |
| | iii) Composition of Finance Committee | |
| | iv) Composition of Publication Committee | |
| | v) Composition of Library Committee | |
| | vi) Composition of Research Committee | |
| | vii) Staff Strength of CIBS | |
| | viii) Examination Result of CIBS | |
| | ix) School-wise and class-wise enrollment of Gonpa/Nunnery Schools | |
| | x) Examination Result of DPS, Zanskar | |
| | xi) Staff strength of DPS, Zanskar | |
| | xii) Examination Result of BDSV, Keylong | |
| | xiii) The Staff Strength of BDSV, Keylong | |

1. BRIEF HISTORY:

Prior to 1959, scholars, novices and monks of Ladakh used to go to Tibet in pursuit of higher monastic Buddhist education and used to study to do research for years in the famous Mahaviharas of Drepung, Sera, Gadan, Tashi Lhunpo, Sakya, Sangag Chosling, Derge, Dregung etc. This practice abruptly came to an end because of historical reasons. Hence, it was held imperative that a Buddhist Institute should be established for formal Buddhist education in this country. Leh was chosen the centre for the dissemination of the Buddhist Culture and Philosophy in view of its geophysical suitability and traditional matrix.

Accordingly, the Central Institute of Buddhist Studies was established at Leh with the holy rituals performed by Rev. Ling Rinpoche, the Senior Tutor to H.H. Dalai Lama XIV. The Institute was initially called the "School of Buddhist Philosophy". In 1962, at the behest of Ven. Kushok Bakula, Pandit Jawahar Lal Nehru, the first Prime Minister of India was convinced of the necessity of such an Institution for the Buddhists living in the Himalayas. Thus the Institution was given full accreditation in the matter of financial support under the administrative charge of the Ministry of Culture, Govt. of India.

In its initial stages, the Institute admitted ten scholars: one each from ten important Gonpas (Monasteries) of Ladakh. The appointment of two teachers was made to instruct the students in Tibetan Literature and Buddhist Philosophy. For 3 years these 10 Gonpas bore the entire expenses of the students and the teachers. From 1959 to 1961 the School was conducted at Leh. From there it was shifted to Spituk Village about 8 Kms away from Leh in 1962. The Institute had its new set up in 1973 at Choglamsar, 8 Kms South-East of Leh and was registered in the year 1964 under the J&K Registration Act of 1941 as an Educational Institution. Sanskrit, Hindi, Tibetan, English and Pali languages were introduced, besides the teaching of Buddhist Philosophy. In 1973 the Institute was affiliated to Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, U.P. and the courses suitable to the students of the frontier region were introduced.

The first Principal of the Institute was a renowned Tibetan Buddhist Scholar Ven. Yeshe Thupstan who worked from 1959 to 1967. Ven. Lochos Rinpoche was appointed as the second Principal of the Institute. Dr. Tashi Paljor worked as the Principal of the Institute from 1979 to 2005. Consequent upon the retirement of Dr. Nawang Tsering from the post of Principal after rendering 5 years of his service from 2005 to 2010, Dr. Wangchuk Dorjee Negi took over the charge of Principal on 15th June 2010.

2. OBJECTIVES:

The main purpose of the Institute is to sharpen the multi-faceted personality of the students through inculcation of the wisdom of Buddhist Philosophy, literature and arts as well as to familiarize the students with the modern subjects. This has been a unique Institution in the country because of its provision to teach all the aspects of Himalayan Buddhist Culture at one place. For the achievement of the above objectives, the Institute aims at:

- a. A deep study of Buddhist Philosophy along with History, Culture and Art.
- b. The study of canonical and modern languages like Sanskrit, Bhoti, Pali, Hindi and English.
- c. The study of modern subjects such as History, Political Science, Arithmetic, Economics, Comparative Philosophy, General Science, and Social Studies.
- d. The translation of Buddhist scriptures into Sanskrit, Hindi, English, and other Indian languages.
- e. The collection, conservation and publication of rare manuscripts.
- f. The carry out of research work on Buddhist Philosophy, History, Art, and Himalayan Culture.
- g. The collection and conservation of object-de-arts of archaeological significance.
- h. Study of Amchi (Bhot Medical Science), Sculpture, Thanka Painting, religious wood block carving, and architecture.

3. MANAGEMENT:

The Management of the Institute is vested upon a Board of Management under the chairpersonship of Joint Secretary to the Govt. of

India, Ministry of Culture. The members of the Board consisted of the representatives of different Ministries, Departments, Associations, Universities and Buddhist Scholars nominated by the Govt of India, Ministry of Culture. The tenure of the members of the Board of Management is for a period of three years with effect from the first meeting of the reconstitution of the Board. The Director of the Institute is the Member Secretary of the Board. The existing composition of the Board of Management is placed as Annexure at page 15. The meeting of the Board of Management convenis after every six months.

4. CONSTITUTION OF SUB-COMMITTEES:

Several sub-committees have been constituted under the Board of Management to implement its directives. A brief/writ up on each sub-committee is as under:

- i) **Academic Committee:** The Board of Management constituted an Academic Committee consisting of eminent scholars and academicians to advise the Board in the Academic affairs of the Institute. The committee meets once or twice in a year as per need to advise the Board in the respective field. The existing Composition of the Academic Committee is placed as Annexure at page
- ii) **Finance Committee:** A Finance Committee under the chairpersonship of Deputy Secretary (Finance)/Director (Finance) of the Govt. of India, Ministry of Culture is constituted as per memorandum of Association and Rules and Regulations of the Institute. The Committee meets once or twice a year to make appropriate recommendation on the proposal involving financial implications. The Committee also reviews the Annual Accounts and Budget of the Institute etc. The existing composition of the Finance Committee is placed as Annexure at page
- (iii) **Publication Committee:** The Institute is carrying out the publication of rare books and manuscripts relevant to Himalayan arts, culture and language. The rare books/manuscripts are placed before the Publication Committee for review and justify for its publication before sending to the press. The Publication Committee consists of eminent scholars and experts in the field of publication. The existing composition of the publication committee is placed as Annexure at page
- (iv) **Library Committee:** The Library Committee consists of experts in the field of Library and recommend for upgradation and improvement of the Library from time to time including the requirement of additional staff,

machines and equipment, digitization, cataloguing etc. The existing composition of the Library Committee is placed as Annexure at page 27.

- (v) **Research Committee:** The Research Committee of the Institute conducts inter-view for selection of candidates for fellowships, reviews the synopsis and progress of the Research Fellows etc. The existing composition of the Research Committee is placed as Annexure at page.

5. Funds: The Institute is fully financed by the Ministry of Culture, Govt. of India and has been allocated a provision of Rs. 750.00 lakhs and Rs. 500.00 Lakhs under Plan and Non-Plan budgets respectively for the year 2011-12 to execute various projects approved by the Board of Management, CIBS, Leh.

6. Staff Strength: The Director being the Chief Administrative Officer supervises the Institute assisted by the Administrative Officer and other staff of the Institute. The staff strength, category-wise of CIBS, Leh, showing teaching and non-teaching staff separately, is placed as Annexure at page 29.

7. Faculties and Departments: The faculties and departments of the Institute have been established on the basis of Panch Mahavidyas of Monastic tradition for smooth and effective functioning of the Institute on University pattern as indicated below:

- i) Faculty of Adhyatmat and Nyaya Vidya (faculty of Philosophy And Logic)
- ii) Faculty of Sabdha Vidya (Faculty of Literature and Language)
- iii) Faculty of Bhot Chikitsa and Shilpa Vidya (Faculty of Bhot Medical Science and Arts)
- iv) Faculty of Audhunik Vidya (Faculty of Modern Studies)

These faculties are further divided into different departments in relevant to their studies as per detailed given below:

- I) Faculty of Adhyatma and Nyayavidya (Faculty of Philosophy And Logic)

These faculties consists of six departments for Mool Shastra and Sampradaya Shastra with different branches of the disciplines. As per Monastic system Adhayamat and Nyavavidaya are two independent vidyas and having different faculties. But, we have combined together to suit the syllabus in the Institute. The department as discussed is given below:

- i) Department of Bhot Baudh Darsahn
- ii) Department of Baudh Darsahan
- iii) Department of Nyingma Sampradaya
- iv) Department of Kargyudpa Sampradaya
- v) Department of Sakya Sampradaya
- vi) Department of Geylukpa Sampradaya

II) Faculty of Shabdavidya (Faculty of Language)

This faculty consists of the languages as per detail given below:

- i) Department of Bhoti/Tibetan
- ii) Department of Sanskrit
- iii) Department of Pali
- iv) Department of English
- v) Department of Hindi

III) Faculty of Bhot Chikitsa and Shilpa Vidya (Faculty of Bhot Medical Science and Arts)

The Institute is taking much interest in preservation and promotion of traditional Himalayan arts and culture. Accordingly, the following departments have been set up for preservation and promotion of the arts and culture of the region:

- i) Department of Bhot Chikitsa and Astrology: It is centuries old tradition in Ladakh to provide herbal medicines to the patients. When there were no allopathic medicines, the Sowa Rigpa System of Medicines used to be very popular in the region. The people still believe that the Sowa Rigpa System of Medicines is the most useful one and has no side effect. So the people opt for Sowa Rigpa System of Medicines. Keeping the facts in view,

the Institute imparts training to students interested in Bhot Medical Science. The 10 + 2 passed students having the sound knowledge of Bhot language are eligible for admission into six years' Bhot Medical Science Course. There are numbers of students who have been awarded the degree and some of them are practicing in the market while some are in Govt./private jobs.

ii) Department of Traditional Scroll/Fresco Painting: This art of painting is very popular in the region. Monasteries of Ladakh are very popular for preserving numerous Thanka paintings and frescoes. The Frescoes of Alchi monastery and Lamayuru monastery are very famous. One can still see the paintings that are one thousand years old. Besides, in each village there is a monastery having Thankas, frescoes and statues. The tourists from all over the world are coming to Ladakh in summer season to visit these monasteries. The Institute runs a Buddhist Scroll painting course for the students. A number of students are receiving training in this course to keep alive the centuries old tradition of making the thankas.

iii) Department of Traditional Sculpture: The making of clay statues and monastic masks are very common in Ladakh region. There are monastic festivals known as Gustor/ Dosmoche/ Tsetchu/Nagrang in every monastery on a special occasion. On this occasion, the mask dance popularly known as Cham is performed by wearing masks of different Buddhas and Bhodisattvas, gods, deities etc. The Institute has arranged to train the students for making the art of sculpture of Buddhas, Bhodhisattvas, gods, deities etc., and also teaching the art of

making masks. The interested students have to undergo the training for six years after passing Class X. Numbers of students are under training in this art of making statues and masks.

iv) Department of Traditional Wood Block Carving: In olden time, when there were no printing machines to print books, here in Ladakh, the people used to get the copy of religious and other texts copied from wooden blocks. The scripts of texts especially religious texts are carved on hard wooden blocks in a systematic way so that the scripts get printed on a paper for reading. Once a text is carved on the wooden blocks, one can copy the text for thousand times like photostate copies. This was very popular in Ladakh in olden time. There is a system to host prayer flag in the monastery as well as every Buddhist household known as Tarchok host on top of the house and Tarchan on the main gate. These prayer flags are printed text on clothes of five different colours which symbolize for high spiritual power. The text contained Lungsta and Gyal –Tsan Tsemo. The text prints out on clothes

from wooden block made for the purpose. To continue this art, the Institute has introduced a six year course of Wood Carving. Besides the block making, one can learn the art of carving other decorative items like the carving of dragons, birds, lions, horses etc. This art is very popular in Ladakh region and one can earn handsome money for one's livelihood through this.

4. Faculty of Audhunik Vidya (Faculty of Modern Studies): There are five departments under this faculty which are as under:

- i) Department of Buddhist History and Culture.
- ii) Department of Comparative Philosophy
- iii) Department of History
- iv) Department of Economics
- v) Department of Political Science

8. New Admission: Admission is being provided from Class VI to IX on the basis of an interview conducted by the Admission Committee as per the norms prescribed. However, the students of the feeder Gonpa / Nunnery Schools of the Institute are admitted directly.

Admission is also given to the students to the six years' course in Amchi, Bhot Scroll Painting, Sculpture, and Wood Carving depending on the availability of seats. During the year under report 158 students were admitted into various classes including professional courses.

9. Seminar/Symposium:

a) During the year under Report, the institute organized four days 'All India seminar on the subject "Contribution of Buddhism to Indian Culture" w.e.f 17-08-2011 to 20-08-2011 on the institute's Campus by inviting scholars from different universities, institutions and monasteries. The seminar was inaugurated by H.H.Drigung Skabgon Chhe-Tsang Rinpoche and eminent Buddhist scholars and Head of the Drigung Kagyud Sect of Mahayana Buddhism. Shri Rigzin Spalbar, Chief Executive Councilor, Ladakh Autonomous Hill Development council attended the inauguration function as Guest of honour. A large number of scholars from different Universities, Institutions and Monasteries from all over India participated in the seminar and presented their valuable papers. Besides, a large number of scholars from Ladakh region also participated in the seminar. The papers presented in the seminar have been collected and is under publication in the form of book titled "Ladakh Parbha". The valedictory function of **the**

seminar was presided over by Geshe Konchok Namgail, the president of All Ladakh Gonpa Association, Leh.

b) International Conference: Two days International Conference on the subject “Buddhism in Kashmir” was organized by the ICCR(Indian Council for Cultural Relation) in Association with University of Kashmir and CIBS, Leh from 5- 6th September 2011 at CIBS, Leh. The seminar was inaugurated by Shri Suresh K Goel, Director General, ICCR. Prof. Riyas Panjabi former Vice- Chancellor, University of Kashmir attended as Guest of honour. The scholars from different countries of the world participated in the conference and presented their valuable papers.

c) Local Seminar: During the year under report, four days’ local seminar was organized at Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, H.P. by involving the local scholars from Ladakh and Lauhal & Spiti valley from 2- 5th August, 2011. Besides, three days’ local seminar was organized at Disket and Tangyar of Nubra valley from 17-7.2011 to 19-7-2011. The seminar was like an awareness campaign for preservation and promotion of Himalayan arts, culture and language and remained very successful.

10. Educational Tour: A group of 50 students of classes Acharya II, Shastri-III, U.M-II, and final year of Sculpture, Painting and wood carving were taken for *Bharat Dharshan* (Educational Tour) in the month of January 2012 for a period of 36 days. The group visited Delhi, Varanasi, Hyderabad, Bangalore, Mysore, Hubli, Goa, Mumbai, Ajanta and Elora. The Educational Tour was conducted under the supervision of Khonpo Thupstan, Reader and Miss Tanzin Choedon Lecturer of the Institute and the purpose of the tour was to familiarize the students with the great historical, industrial, religious, and geographical wealth of the country and to imbibe in them the feelings of National Integration.

The students of the lower classes of the Institute were also taken for a local educational tour, i.e., *Ladakh Darshan* to Nubra valley for a period of 5 days under the supervision of three teachers. The total number of students who took part in this tour was 162 from classes VIII, P.M.I and P.M.II. They visited the historical places, monasteries; lake etc. of the area. Thus the institute provided an amount of Rs.5.50 lakh to conduct these tours.

Besides, a batch of Twenty two Amchi students under the guidance of the teachers concerned toured to Zaskar valley for 10 days from 5th to 14 August 2011 for collection/identification of various medicinal herbs and materials used for preparation of Amchi system of

medicines. Various herbs were collected and demonstrated for preparation of medicines. The samples have been preserved in an album for reference. A large number of herbs were identified during the tour by collecting raw materials. Varieties of Amchi medicines have been prepared by the Amchi Department of the Institute itself through practical classes which include powder, pills etc., during the year under report these medicines are being provided to patients on very nominal charges.

11. Publication: The Institute published numbers of rare and valuable books on various subjects including the proceedings of the National Seminars (Ladakh-Prabha). During the year 2011-12, the Institute published five books viz; Ladakh Prabha-13, Ladakh Prabha-14, Ladakh Prabha-15, Tibetan Religious History (Chos-jung) and Buddha and his Dharma.

12. Research: The Institute has established four Fellowships for Research Scholars on the pattern of U.G.C. The research works are being conducted in the field of Buddhism as well as in other four sects of Mahayana Buddhism. The Sampurnanand Sanskrit University has so far awarded the degree of Ph.D to eight scholars from this Institute. Three Research Scholars have been doing their research for Ph.D. during this year.

13. Campus: The Institute is located 8 kilometers south of Leh town on the bank of Indus river in Choglamsar. It has two Campuses new as well as old. The old campuses located on a piece of land measuring 23 Kanals and used for running the classes for the junior wing form Class 6th to 8th with the strength of 265 students. It is under the charge of a Headmaster assisted by the Trained Graduates Teachers (TGTs) and other staff members. There are teaching block, a small auditorium, office and children's library. Some projects of the institute such as Manuscripts Resource Centre, Manuscripts Conservation Centre are going on in the old campus. The new campuses located just half an kilometer away from the old campus built up with separate blocks for teaching, Administration, Library and hostels with a capacity of one hundred students in each which are separately provided to the monks, boys and girls. There are 60 residential quarters for staff and a Guest house with a capacity to accommodate 20 guests at a time. There is a sport stadium with facilities of spectators' gallery, dressing room, store etc. The constructions of an auditorium with seating capacity of 700 people are under process which is likely to completed very shortly. Besides, the

construction of a philosophical debate Hall, students' recreation center, and part of sit development works are in progress.

14. Library: The Library is a vital organ of the Institute in which not only the students and teachers, but also other members of the Institute depend upon for seeking information and wisdom. A large number of Indian as well as foreign tourists visits the Library during the tourist season. The Library of the Institute was shifted to the new campus for which a separate building of three stories available. The library has been computerized by installing the Slim Thumi Software. There are three sections of the Library, i.e., (1) General Section (2) Sungbum/Tibetan Section and (3) Reference Section. The total collection of 29065 books in Tibetan, English, Hindi, Sanskrit, Pali and Urdu comprising books on Religions, History, Philosophy, Literature, Sociology etc, are available. The Library has a well-collected reference section comprising of Encyclopedias, Dictionaries and Year Books. During the year under report the Institute purchased 800 books worth Rs.2.55 lakhs. The Library of the Institute subscribed 20 Indian and foreign research journals/periodicals during the year. Besides, 45 numbers of various types of magazines in different languages were also subscribed for the Library. In the interest of the students and readers, the Institute subscribed 10 different types of newspapers for the Library.

15. Museum: The Institute has built up a small archaeological Museum with a collection of antiquities and objects-de-art which among other things include sculpture and painting articles of Ladakh, antique photographs and replicas brought from many historical places of India. This is a unique Museum of its kind in Ladakh, which draws attention of tourists as well as the research scholars on a large scale every year.

16. Special Lectures/Other Academic Activities:

i) Gyalsras Kushok Bakula Rinpoche Memorial Lecture Series:

Ven. Kushok Bakula Rinpoche was a great scholar and a social reformer of Ladakh. He did yeomen service for the development of Ladakh. He spent his life for the welfare and uplift of the poor and the downtrodden people of the region. He had a good political position in the State Govt. of Jammu and Kashmir as Cabinet Minister, and was M.P. in the Indian Parliament, Ambassador to Mongolia etc. In recognition of his social work,

the Govt. of India awarded him with the Padma Bhushan. Due to his endeavour, the *Central Institute of Buddhist Studies* formerly known as *School of Buddhist Philosophy*, Leh was established in the year 1959 to develop and preserve the rich cultural heritage of the region. In his memory, the Board of Management, CIBS, Leh in its meeting held on 27-2-2004 decided to commence a lecture series. During the year under report, the Lecture Series was conducted on 29th June 2011 by inviting Prof.S.Rinpoche, former Vice Chancellor, CUTS, Sarnath. He delivered his lecture on a specific topic, i.e, “Teachers - Students Relationship”. The lecture was attended by a large number of faculty members, senior students, other people interested.

ii) Medical Facilities: The Institute has a dispensary of its own and provides medicines to the students and the staff. A part time Doctor visits the Institute every alternative day. The part-time Doctor is assisted by a Medical Supervisor and a Nursing orderly. This arrangement is very useful for the students and the staff. During the year the Institute purchased medicines worth Rs. 0.58 lakhs to be distributed among the students and the staff for treatment of different ailments.

iii) Annual Sports Meet: To encourage athletic activities, the Institute arranged Annual Sports Meet for 10 ten days from 10-11-2011 to 20-11-2011 during which various types of games and sports activities were conducted among the different houses viz; Nalanda, Takshila and Vikramshila. The position holders were honoured with medals and also provided the certificate on the occasion of Annual Function.

iv) Annual Magazine: The Institute also brings out an Annual Magazine entitled “*Rigpai Durtse*” to which the students and the staff contribute articles on different subjects. The activities of the Institute and the staff and students having received awards during the year are also high lighted with their photographs. This is purely an institutional magazine and it reflects the nature and scope of the Institute absolutely.

17. Syllabi: In the formative years, the ten-year syllabi covering the subjects of Hindi, Sanskrit, Buddhist Philosophy and Tibetan Language were in operation. In the year 1973, the Institute was affiliated to the

Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, U.P. and special syllabi were drawn up to fulfill the requirements of the border area students and to achieve the aims and objectives for which the Institute was initially established. The University has constituted a Board of Studies to have periodical reviews of the syllabi. The Board holds a meeting once in a year to review the syllabi and to introduce new courses. The compulsory subjects are Sanskrit, Hindi, English, Tibetan Literature, and Buddhist Philosophy and the optional subjects are Political Science, Economics, Pali, Comparative Philosophy, Tibetan Medicine, Wood Carving, Sculpture and Painting. The syllabi of the Institute have been approved by the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi on the recommendation of the Board of Studies of the University. The Jammu & Kashmir Universities and the State Board of School Education, J&K have recognized the degrees of the Sampurnanand Sanskrit University since 1984 on reciprocal basis as equivalents to the degrees given below:

| | |
|---------------------------|------------------|
| 1. Purva Madhyama | Matriculation |
| 2. Uttar Madhyama | Higher Secondary |
| 3. Shastri (with English) | B.A. |
| 4. Acharya | M.A. |

During the year under report, the Institute included the Sampradya Shastra of Mahayana Buddhism in Shasrti and Acharya course as one of the compulsory optional subjects which has been welcomed by the faculty members, students and other scholars of Ladakh.

18. Stipend to Students: The stipend ranging from Rs. 685/- to Rs. 845/- per student per month is presently granted to 575 students. An amount of Rs.34.44 lakhs was disbursed to the students on account of stipend during the year 2011-12.

Besides, an amount of Rs. 59.37 lakhs has also been disbursed to 946 students of 50 Gonpa/Nunnery Schools running in the various monasteries of Ladakh region on account of stipend.

19. Examination Result: The examinations from Class VI to Class VIII were conducted by the Institute and examinations from Purva Madhyama I to Acharya (M.A)II were conducted by the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi. The overall pass percentage of the

examination was worked out to be 76%. The result of each class of the academic year 2011-12 is placed as Annexure at page 31. To improve the academic standard of the junior students necessary arrangements were made to conduct the 1st, 2nd and 3rd terminal tests in May, August and November every year by the Institute.

20. Gonpa/Nunnery Schools:

To achieve its objectives, the Institute is running 50 Gonpa/Nunnery Schools in different monasteries which are extremely popular in the region. These schools are being run in collaboration with the respective monasteries, and accordingly, they arrange classrooms, hostel facilities and also provide ritual teachings. The Institute provides one to three teachers depends on number of enrolment in a particular school. Besides, the furniture, stationeries, text books and note books and stipend to the students are being provided by the Institute. The teachers provided by the Institute teach the modern elementary education viz. Bhoti, Hindi, English, Mathematics, Social Studies etc., in addition to the monastic education. During the year under report 946 students enrolled in the 50 Gonpa/Nunnery schools located in different monasteries of Ladakh. The school-wise and class-wise enrolment of the students for the year 2011-12 is placed as Annexure at page 32.

21. Annual Function: The 52nd Annual Day of the Central Institute of Buddhist Studies was organized on 25th November 2011 on the Institute's Campus with great enthusiasm. The Prizes were distributed among the position holders in the Annual Examination and in favour of the students who won the prizes in various competitions viz., essay competition, Poem recitation competition, Painting competition, Lecture competitions, Sports activities, Cultural activities, quiz competition etc. Shri Tahi Rabgais, an eminent Ladakhi scholar was the Chief Guest on the occasion and the prizes were distributed by him. A colorful Cultural Programme has been shown by the students of the Institute on the occasion. The function was attended by many scholars, Guests of the Ladakh region in addition to the staff and students. The function was concluded with the singing of National Anthem

22. Other Important Events: The following celebrations and activities were carried out in the Institute with great enthusiasm during the year under report:

i) Birth Anniversary of Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar:

120th Birth Anniversary of Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar was celebrated on 14th April, 2011 in the Institute. The faculty members and senior students actively participated in the function and threw light on the life and achievement of Dr. B.R. Ambedkar.

ii) Visit of Shri V. Mohan Principal Accountant General Srinagar:

Shri V. Mohan, Principal Accountant General, J&K, Srinagar inspected the Institute on 1-3-2011 and discussed on the issues relating to the accounts and auditing of accounts of the Institute.

iii) Visit of His Holiness Gyalwang Karmapa Rinpoche:

On the request of the Institute, His Holiness Gyalwang Karmapa Rinpoche visited the Institute on 26-04-2011 and blessed the staff and students.

iv) Lecture of Prof. S Rinpoche:

The Institute arrange lecture for the benefit of staffs, students and other people from time to time Prof S. Rinpoche was requested to deliver his lecture on the subject "Buddhism for world peace" and accordingly, he delivered his lecture on 25-06-2011 at Chowkhang Vihar, Leh. A large number of public were gathered a part from staff and students. The open stage questions/answer program was also made at the end of lecture.

vi) Visit of Shri Wajahat Babibullah: Hon'ble Chairmam National Commission for Minorities, Govt. of India, Shri Wajahat Babibullah, Hon'ble Chairman, and National Commission for Minorities, Govt. of India visited the Institute on 17-09-2011. He has discussed with Director and other faculty members regarding the induction of Bhoti language in Schedule VIII of the Constitution of India. Thousands of Bhoti books available in the library of the institute were shown to him. He was impressed with the physical and academic infrastructure and ongoing activities of the Institute and was

agreed to recommend for declaration of Deemed to be University status to CIBS, Leh.

- vii) Visit of Shri ANP Sinha, (OL) Secretary to the Govt. of India Ministry of Home Affairs:

Shri ANP Sinha, Secretary to the Govt. of India, Ministry of Home Affairs: visited Institute and have a detailed discussion about the Bhoti language and Buddhist Philosophy. He also visited the library of the Institute.

23. Project for the compilation of Encyclopedia of Himalayan Buddhist Culture: The Board of Management of the Institute approved the project of the compilation of Encyclopedia of Himalayan Buddhist Culture under the supervision of Prof. Ramesh Chandra Tiwari. The project is for a period of five years and it has been proposed to compile the Encyclopedia in 10 volumes. The project is launched by engaging scholars on contractual basis. The project is in progress under the supervision of the Chief Editor assisted by two Editors and three Research Assistants. Two volumes of the Encyclopedia covering the Ladakh region has been published. The works on other volumes are in progress. The Board of Management, CIBS, Leh in its meeting held on 19.12.2011 approved the extension of the project for a further period of five years keeping in view its significance.

24. Appointment of faculty members:

During the year under report, eight posts of T.G.Ts for Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, H.P. a branch school of CIBS, Leh and 6 posts of T.G.Ts for junior wing of CIBS, Leh and three posts of T.G.Ts for Duzin Photang School, Zanskar, were appointed after conducting the the interview. Besides, the interview for five posts of lecturer one each in Sampradya shastra and one in Bhot literature were conducted. The appointment orders on the posts may be issued on the approval of the Board of management in its next meeting.

25. Manuscripts Resource Centre:

The National Mission for Manuscripts, Govt. of India has designated CIBS, Leh as the Manuscripts Resource Centre and Manuscripts Conservation Centre for the Ladakh region. Accordingly, the Institute is carrying out the assigned job by engaging scholars on contractual basis. At present 5 resource Persons are working on the project from March to November. The documentation works are kept closed for three months from December to February due to severe cold weather. The Institute so far has documented about 21614 manuscripts from 1,441 different Monasteries/Palaces/Individuals of Ladakh region. The Institute is trying to document all available manuscripts in the region. Besides, the Institute also carry out the conservation of rare manuscripts available in different monasteries of the region. So far, we have conserved 6,474 folios.

26. Duzin Photang School, Zanskar:

i) Brief History: In 1980, His Holiness Dalai Lama XIV paid his first visit to Zanskar on the invitation of the Buddhist Association, Zanskar and felt it necessary to open a school for the preservation of the rich culture of the area. Accordingly, he donated some funds to the Buddhist Association, Zanskar for the purpose. In September 1984 the Buddhist Association established a School at Duzin Photang for the benefit of the poor and needy students of the area. Initially, 101 students were admitted in the School and three teachers were also appointed. The hostel facilities were also provided to the students coming from far-flung areas. The Buddhist residents of Zanskar also donated funds for the improvement and upgradation of the School. H.H. the Dalai Lama during his second visit to Zanskar in 1988 further donated funds for the development of the School. The Buddhist Association, Zanskar and the people of Zanskar had represented to the then Hon'ble Prime Minister of India, Mr. Rajiv Gandhi regarding the importance of the School with a request to take over the school by the Govt. of India on the pattern of the Central Institute of Buddhist Studies, Leh. The Hon'ble Prime Minister of India paid his visit in March/April 1988 to Zanskar and decided that the Govt. of India would take over the D.P.S. as a branch school of the CIBS, Leh w.e.f. Ist November 1989. Since then, the School is being run under the financial and administrative control of CIBS, Leh-Ladakh. At present 253 students are on the roll of the School from Classes I to X. The construction work of the new

Academic Block for the D.P.S. was entrusted to State P.W.D., Kargil which completed the Academic Building in the month of September 2004 and handed over the Building to the Institute on 23 September 2004. Accordingly, the classes are running in the new Academic Block since then. The construction of the Hostel Building and Staff Quarters was also completed and commissioned. The Govt. of India directed to upgrade the school upto Class X by appointing 5 TGTs one each in Mathematics, Hindi, Sanskrit, Buddhist Philosophy and a General Teacher, Accordingly, five TGTs are working in regular basis and two T.G.Ts.on contractual basis. The school is running smoothly and effectively.

(ii) Examination Result (DPS, Zanskar): The annual examination of the students from class 1st to 8th of Duzin Photang School, Zanskar is being conducted by the School under the supervision of the Head Master. The annual examination of class IX and X are being conducted by Sampurnanand Sanskrit University Varanasi through CIBS, Leh. A examination centre has been set up at Duzing Photang School, Zanskar keeping in view the hard ship faced by the students for coming to Leh for examination purpose. The class-wise enrolment of students alongwith result of each class for the academic year 2011-12 is placed as Annexure at page 35.

(iii) Other activities (DPS, Zanskar): The school is carrying out various co-curricular activities viz, Annual Sports- cum-Literary Competitions, Conduct of Educational Tour to visit the historical places/monasteries, celebration of birth anniversary of important national level personnel, conduct of monthly lecture competition etc. Besides, the School has a small Library of good collection of books for the students.

iv) Staff strength: the staff strength of the Duzing Photang School for the year under report is placed as Annexure at page 36.

27. Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, District Lahoul & Spiti (H.P.)

(i) Brief History: The Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, Lahaul-Spiti (H.P) was established in the year, 1976 to preserve the most valuable Buddhist Arts, Culture and Language of the Himalayan region viz; Lahaul, Spiti, Kinnaur, Pangi, Kullu and Manali. Prior to 1959, Scholars, Novices and Monks of this area used to go Tibet to pursue higher Monastic

Education which came to an end in 1959 due to historical reasons. Thus, the Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong came into existence to continue the old age practice to provide monastic education to the young novices. Initially, the Vidyalaya was run with the funds raised by public donation. Subsequently, the Govt. of India, Ministry of Culture provided some financial assistance under the scheme of Financial Assistance for Development of Buddhist/Tibetan Organisations. The people of the region tried their best for the take over of the Vidyalaya as an Autonomous Organization of the Govt. of India on the pattern of Central Institute of Buddhist Studies, Leh and Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi. But, it could not be taken over as an Autonomous Organization of the Govt. of India, Ministry of Culture. However recently, the Govt. of India, Ministry of Culture on the recommendation of the Board of Management, CIBS, Leh decided to take over the Vidyalaya as a branch School of CIBS, Leh on the pattern of Duzin Photang School, Zanskar. Accordingly, CIBS, Leh took over the Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, H.P. as a branch School from 5 March 2010 in pursuance to Govt. of India, Ministry of Culture's letter No.F.1-11/2004-BTI dated 05-03-2010. Since then the administration of the Vidyalaya is being looked after by CIBS, Leh with full financial support.

At present 90 students are studying in the Vidyalaya from Class VI to X. Consequent upon the take over as branch School of CIBS, Leh, the number of students is likely to increase. The Vidyalaya is affiliated to the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi and the examination of the students is being conducted by the said University. There are one Headmaster, six Trained Graduate Teachers (TGTs), one Bhoti Teacher, one Buddhist Philosophy Teacher, one UDC and three Class-IV employees working in the Vidyalaya. The Vidyalaya has its own building for conducting the Classes and also has a Boarding House for students coming from far flung areas. The Central Institute of Buddhist Studies, Leh is providing the salaries of the Staff, Stipend to the Students, furniture/furnishing items and other day-to-day expenditure of the Vidyalaya on the pattern of Duzin Photang School, Zanskar.

(ii) Examination Result of BDSV, Keylong: The Annual Examination of Class-VI to VIII of the Vidyalaya is being conducted under the supervision of the Headmaster of the said Vidyalaya. The Annual Examination of class-IX and X is being conducted by the Sampurnanand Sanskrit University,

Varanasi to whom the Vidyalaya is affiliated. The Class-wise enrolment of student's alongwith the result of each class for the Academic Year 2011-12 is placed as Annexure at page 37.

(iii) Staff Strength: The staff strength of the Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, H.P is placed as Annexure at page 38.

Composition of Board of Management, CIBS, Leh.

| <u>S.No.</u> | <u>Name and Address</u> | <u>Position</u> |
|--------------|---|--------------------------|
| 1. | Ms.Arvind Manjeet Singh, Joint Secretary to the Govt. of India Ministry of Culture, New Delhi | Chairperson |
| 2. | Shri Tsering Angchuk Deputy Commissioner, Leh | Vice-Chairperson |
| 3. | Prof. R.K. Diwedi (nominee of the Vice-Chancellor of the University to which the Institute is affiliated) | Member |
| 4. | Mrs. Rubina Ali, Director (Finance) Ministry of Culture Govt. of India, New Delhi | Member |
| 5. | One Representative of the Ministry of External Affairs | Member (Ex – Officio) |
| 6. | One Representative of the Ministry of Education | Member (Ex – Officio) |
| 7. | Chief Education Officer, Leh (Representative of Education Deptt., Govt. of J&K) | Member (Ex-Officio) |

8. Geshe Konchok Namgail, President Member
All Ladakh Gonpa Association, Leh
(Representative of All Ladakh Gonpa Association, Leh)
9. Dr.Tundup Tsewang, President Member
Ladakh Buddhist Association, Leh
(Representative of Ladakh Buddhist Association, Leh)
- 10-12 Three Buddhist Scholars nominated by Govt. of India.
- i) Prof.Nawang .Samten, Member
Vice-Chancellor, Central
University of Tibetan Studies (CUTS), Sarnath, (U.P)
- (ii) Dr.Tashi Paljor, Member
Ex-Principal of CIBS, Leh
- (iii) Dr. S. Singh, Retired Professor Member
of Buddhist Studies, University
of Delhi
13. Dr. Jamyang Gyaltzan, Professor in Member
Bhot Literature, CIBS, Leh
(Staff Representative nominated by Govt. of India)
14. Dr. Wangchuk Dorjee Negi, Director, Member- Secy
CIBS, Leh

Annexure

Composition of Academic Committee

| <u>S.No.</u> | <u>Name and Address</u> | <u>Position</u> |
|--------------|---|-----------------|
| 1 | Prof. Yeshe Thapkas, Central University of Tibetan Studies, Sarnath. | Chairperson |
| 2-5. | One Representative each from 4 major sects of Mahayana Buddhism in Ladakh | Members |
| | 1) Prof. Jamyang Gyaltsan | |
| | 2) Dr.Urgyan Dadul | |
| | 3) KhanpoTsewang Rigzin | |
| | 4) Prof. Konchok Angdu | |
| 6. | Prof. Satya Pal, Head Department of Buddhist Studies, University of Delhi, Delhi. | Member |
| 7. | Prof. R.K.Dwivedi, Prof. and Head Department of Buddhist Philosophy, S.S.University, Varanasi. | Member |
| 8. | Prof. B.N. Labh, Head, Department of Buddhist Studies Jammu University, Jammu. | Member |

- | | | |
|-----|--|------------------|
| 9. | Prof. Sonam Gyatso, Central University of Tibetan Studies, Sarnath. | Member |
| 10. | Dr. Tashi Paljor, Ex-Principal, CIBS Maitri Niwas, Bhajogi P.O. Manali, Distt. Kullu (H.P) | Member |
| 11. | Dr. Wangchuk Dorjee Negi, Director, CIBS, Leh | Member-Secretary |

Composition of Finance Committee, CIBS, Leh

| <u>S.No.</u> | <u>Name and Address</u> | <u>Position</u> |
|--------------|---|-----------------|
| 1. | Mrs. Rubina Ali Director (Finance) Ministry of Culture Govt. of India New Delhi | Chairperson |
| 2. | Shri Raman Mehra Deputy Secretary Ministry of Culture Govt. of India New Delhi | Member |
| 3. | Dr. Wangchuk Dorjee Negi Director, CIBS,Leh | Member |
| 4. | Shri.Tsering Mutup Administrative Officer, CIBS, Leh | MemberSecretary |

Annexure

Composition of Publication Committee, CIBS, Leh

| <u>S.No.</u> | <u>Name and Address</u> | <u>Position</u> |
|--------------|--|------------------|
| 1. | Dr. Wangchuk Dorjee Negi Principal, CIBS, Leh | Chairperson |
| 2. | Dr. Padmakar Mishra, Publication Incharge S.S. University, Varanasi. | Member |
| 3. | Chief Editor, Translation Unit Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi (U.P) | Member |
| 4. | Khanpo Konchok Phandey Leh, Ladakh. | Member |
| 5. | Dr. Lobzang Tsewang Professor, Comparative Philosophy, CIBS, Leh. | Member |
| 6. | Shri Tsering Mutup Administrative Officer CIBS, Leh | Member-Secretary |

Composition of Library Committee, CIBS, Leh.

| <u>S.No.</u> | <u>Name and Address</u> | <u>Position</u> |
|--------------|---|------------------|
| 1 | Dr. Wangchuk Dorjee Negi Director, CIBS, Leh | Chairperson |
| 2. | Librarian District Library, Leh | Member |
| 3. | Dr.Tashi Samphel Director, Srongtsan Library, Dehradun | Member |
| 4. | Rev. Lagdor Director, Tibetan Library and Archives Dharamsala (H.P) | Member |
| 5. | Smt.Tsewang Dolma Library & Information Officer, CIBS, Leh | Member-Secretary |

Composition of Research Committee, CIBS, Leh.

| <u>S.No.</u> | <u>Name and Address</u> | <u>Position</u> |
|--------------|---|-------------------|
| 1. | Prof. R.K. Dwevidi Prof. and Head Department of Buddhist Philosophy, S.S.University, Varanasi. | Chairperson |
| 2. | Prof. Pradyumna Dubey Professor in Pali & Buddhist Studies B.H.U., Varanasi. | Member |
| 3. | Dr. Hira Pal Gang Negi Associate Professor University of Delhi, Delhi. | Member |
| 4. | Prof. Jamyang Gyaltsan Professor in Bhot Literature CIBS, Leh. | Member |
| 5. | Dr. L.N. Shastri Chief Editor, Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi (U.P) | Member |
| 6. | Dr.Wangchuk Dorjee Negi, Director, CIBS, Leh | Member-Secretary. |

Staff Strength category-wise of CIBS, Leh**A. ACADEMIC POSTS**

| S.No | Name of Post | Pay Band & Grade Pay | Sanction post | Filled up | Vacant |
|------------------------------|----------------------|----------------------------------|---------------|-----------|--------|
| 1. | Director | 37400-67000 +10000 | 01 | 01 | - |
| 2. | Professor | 16400- 22400(Pre- revised) | 04 | 03 | 01 |
| 3. | Reader | 15600-39100 +7600 | 10 | 07 | 03 |
| 4. | Lecturers | 15600- 3910+5400 | 23 | 20 | 03 |
| 5. | Master Craftsman | 15600- 3910+5400 | 01 | 01 | - |
| 6. | T.G.T | 9300- 34800+4600 | 12 | 10 | 02 |
| 7. | Instructor(WC) | 5200- 20200+2800 | 01 | 01 | - |
| 8. | Gonpa Teacher | 5200- 20200+2800 | 100 | 89 | 11 |
| B. NON TEACHING STAFF | | | | | |
| 1. | Adm.Officer | 15600-39100 +6600 | 1 | 1 | - |
| 2. | Addl. Adm.Officer | -do- | 1 | - | 1 |
| 3. | Office | 9300- | 1 | - | 1 |

| | | | | | |
|----|--------------------|-----------------|---|---|---|
| | Superintendent | 34800+4200 | | | |
| 4. | Accountant | 9300-34800+4200 | 1 | 1 | - |
| 5. | Medical Supervisor | 9300-34800+4200 | 1 | 1 | - |
| 6. | P.A | 9300-34800+4200 | 1 | 1 | - |
| 7. | Head Assistant | 9300-34800+4200 | 1 | 1 | - |

| | | | | | |
|-----|------------------|-----------------|---|---|---|
| 8. | Stenographer | 5200-20200+2800 | 1 | 1 | - |
| 9. | Office Assistant | 5200-20200+2400 | 4 | 4 | - |
| 10. | Cashier | 5200-20200+2400 | 1 | 1 | - |
| 11. | Store Keeper | 5200-20200+2400 | 1 | 1 | - |
| 12. | LDC | 5200-20200+1900 | 1 | 1 | - |
| 13. | Pump-Operator | 5200-20200+2400 | 1 | 1 | - |
| 14. | Driver | 5200-20200+2400 | 2 | 2 | - |
| 15. | Guards Commander | 5200-20200+2400 | 1 | 1 | - |
| 16. | Sr.Guardsman | 5200-20200+1900 | 1 | 1 | - |
| 17. | Guardsman | 4440-7440+1300 | 4 | 4 | - |
| 18. | Jamadar | 4440- | 1 | 1 | - |

| | | | | | |
|-------------------------|---------------------------------------|---------------------|---|---|---|
| | | 7440+1400 | | | |
| 19. | Peon | 4440- 7440+1300 | 6 | 5 | 1 |
| 20. | Hostel Cook | 4440- 7440+1300 | 4 | 3 | 1 |
| 21. | Hostel Bearer | 4440- 7440+1300 | 1 | 1 | - |
| 22. | Canteen Bearer | 4440- 7440+1300 | 1 | 1 | - |
| 23. | Mali | 4440- 7440+1300 | 1 | 1 | - |
| 24. | Sweeper | 4440- 7440+1300 | 3 | 3 | - |
| C. LIBRARY STAFF | | | | | |
| 25. | Library and information Officer | 15600- 3910+5400 | 1 | 1 | - |
| 26. | Asstt.Editor Cum Calaloguer | 9300- 34800+4200 | 1 | 1 | - |
| 27. | Library Information Assitt. | 9300- 34800+4200 | 1 | 1 | - |
| D.RESEARCH WING | | | | | |
| 29. | Research Officer | 15600- 3910+5400 | 1 | 1 | - |
| 30. | Translator | 9300- 34800+4600 | 1 | 1 | - |

Result of the students of the CIBS, Leh for the year 2011-2012:

| S.No. | Class | No of Students enrolled | Appeared | Passed | Pass% |
|--------------|------------------|--------------------------------|-----------------|---------------|---------------|
| 1. | VI | 99 | 95 | 71 | 74% |
| 2. | VII | 64 | 57 | 50 | 87% |
| 3. | VIII | 82 | 81 | 77 | 95% |
| 4. | P.M.Ist | 77 | 76 | 36 | 47.36% |
| 5. | P.M.II | 104 | 103 | 73 | 70.87% |
| 6. | U.M.Ist | 53 | 52 | 41 | 78.84% |
| 7. | U.M.II | 32 | 32 | 28 | 87.50% |
| 8. | Shastri Ist | 40 | 40 | 24 | 60% |
| 9. | Shastri II | 34 | 30 | 17 | 56.66% |
| 10. | Shastri III | 21 | 19 | 15 | 78.94% |
| 11. | Acharya I | 19 | 19 | 17 | 89.47% |
| 12. | Acharya II | 16 | 16 | 16 | 100% |
| 13. | Wood carving | 20 | 17 | 12 | 70.58% |
| 14. | Sculpture Course | 11 | 11 | 10 | 90.90% |
| 15. | Amchi Course | 19 | 17 | 16 | 94.11% |
| 16. | Painting Course | 123 | 13 | 12 | 92.30% |
| | Total: | 704 | 678 | 513 | 75.95% |

School-wise and class-wise enrolment of students of the Gonpa/Nunnery schools of CIBS, Leh:

| S.No. | Name of Gonpa/Nunnery School | Class-wise total enrollment | | | | | |
|-------|--|-----------------------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-------|
| | | 1 st | 2 nd | 3 rd | 4 th | 5 th | Total |
| 1. | Anlay Gonpa School, Anlay, Changthang, Leh | 06 | 03 | 06 | 03 | 03 | 21 |
| 2. | Bardan Gonpa School, Bardan, Zanskar, Kargil | - | 07 | - | - | 01 | 08 |
| 3. | Chemday Gonpa School, Chemday, Leh | 12 | 02 | 02 | 05 | 06 | 27 |
| 4. | Key Gonpa School Kaza, Spiti. | - | -1 | 06 | 07 | 09 | 22 |
| 5. | Diskit Gonpa School, Diskit, Nubra, Leh | - | 04 | 03 | 03 | 03 | 13 |
| 6. | Hemis Gonpa School, Hemis, Leh | 11 | 10 | 19 | 16 | 17 | 73 |
| 7. | Karsha Gonpa School, Karsha, Zanskar, Kargil | 01 | 03 | 05 | 03 | 03 | 15 |
| 8. | Tangyud Gonpa School Kaza, Spiti. | 14 | 09 | 16 | - | - | 39 |
| 9. | Likir Gonpa School, Likir, Leh | 02 | 04 | 03 | 06 | 05 | 20 |
| 10. | Lamayuru Gonpa School, Lamayuru, Leh | - | 03 | 05 | - | 04 | 12 |
| 11. | Matho Gonpa School, Matho, Leh | - | 01 | 03 | 01 | 06 | 11 |
| 12. | Muth Gonpa School, Muth, Changthang, Leh | 03 | 02 | 01 | 01 | 01 | 08 |

| | | | | | | | |
|-----|--|----|----|----|----|----|----|
| 13. | Phyang Gonpa School, Phyang, Leh. | 01 | 06 | 07 | 06 | 05 | 25 |
| 14. | Phuktal Gonpa School, Phuktal, Zanskar, Kargil. | 28 | - | 07 | 02 | 03 | 40 |
| 15. | Rizong Gonpa School, Rizong, Leh | 03 | 02 | 01 | 03 | 07 | 16 |
| | | | | | | | |

| | | | | | | | |
|-----|--|----|----|----|----|----|----|
| 16. | Samstanling Gonpa School, Samstanling, Nubra, Leh | 01 | 01 | 02 | 04 | 04 | 12 |
| 17. | Shachukul Gonpa School Shachukul, Changthang,, Leh | 10 | 09 | 04 | 08 | 14 | 45 |
| 18. | Stakna Gonpa School, Stakna, Leh | 03 | 01 | 02 | 02 | 04 | 12 |

| | | | | | | | |
|-----|---|----|----|----|----|----|----|
| 19. | Hanuthang Gonpa School | 10 | 02 | 02 | - | 03 | 17 |
| 20. | Spituk Gonpa School, Spituk, Leh | 07 | 02 | 06 | 07 | - | 22 |
| 21. | Thiksay Gonpa School, Thiksay, Leh | 03 | 03 | - | 03 | 05 | 14 |
| 22. | Karma Drupgyud Chosling Gonpa School, Choglamsar,Leh | 01 | 03 | 07 | 03 | 03 | 17 |
| 23 | Gyudzin Tantric Gonpa School Phey, Leh | 03 | - | - | 04 | 05 | 12 |
| 24 | Ogyen Chosling Nyingmapa Gonpa School.Choglamsar. | 01 | 02 | 03 | - | - | 06 |
| 25 | Wanla Gonpa School, Wanla | - | 01 | - | - | 06 | 07 |
| 26 | Yarma Gonbo Gonpa School, Yarma, Nubra, Leh | 01 | - | - | - | 08 | 09 |

| | | | | | | | |
|----|--|----|----|----|----|----|----|
| 27 | Chushul Gonpa School, Chushul, Changthang | 09 | 01 | 03 | 05 | 04 | 22 |
| 28 | Nyoma Gonpa School Nyoma, Changthang | 04 | 05 | 04 | 04 | 03 | 20 |
| 29 | Skyurbuchan Gonpa School | 10 | - | - | - | - | 10 |
| 30 | Korzok Gonpa School, Korzok, Changthang | 06 | 04 | - | 05 | 05 | 20 |
| 31 | Rangdum Gonpa School, Rangdum, Zanskar | 10 | 03 | - | 02 | 06 | 21 |
| 32 | Muney Gonpa School Muney, Zanskar | - | 02 | 04 | 04 | - | 10 |
| 33 | Zongkhul Gonpa School Zongkhul, Zanskar | - | 05 | 02 | 02 | 02 | 11 |
| 34 | Stongday Gonpa School Stongday, Zanskar | - | 03 | 01 | - | 05 | 09 |
| 35 | Stakrimo Gonpa School Stakrimo, Zanskar | 03 | - | 03 | 02 | 02 | 10 |
| 36 | Paldar Gonpa School Paldar, Distt., Doda | 08 | 02 | 04 | 06 | 47 | 67 |

NUNNERY SCHOOLS

| | | | | | | | |
|----|--|----|----|----|----|----|----|
| 37 | Shargol Nunnery School, Shargol, Kargil | 06 | 05 | 01 | 02 | 07 | 21 |
| 38 | Wakha Nunnery School, Wakha, Kargil | 03 | 03 | 02 | 04 | - | 12 |
| 39 | Rongo Nunnery School, Rongo, Changthang, Leh | 03 | 02 | 01 | - | 07 | 13 |
| 40 | Chulichan Nunnery School, Rizong, Leh | 02 | 04 | 03 | 01 | 04 | 14 |
| 41 | Zangla Nunnery School, Zangla, Zanskar, Kargil. | 02 | 02 | 02 | 04 | 01 | 11 |
| 42 | Timosgam Nunnery School, Timasgam, Leh | - | 03 | 07 | 02 | 03 | 15 |
| 43 | Sakya Nunnery School, Choglamsar | 03 | 08 | 16 | - | - | 27 |

| | | | | | | | |
|----|--|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| 44 | Karsha Nunnery School, Karsha, Zanskar | - | - | 03 | 02 | 03 | 08 |
| 45 | Bodh Kharbu Nunnery School Bodh Kharbu, Kargil | 01 | - | 02 | 03 | 02 | 08 |
| 46 | Lingshed Nunnery School Lingshed | - | - | - | 03 | 06 | 09 |
| 47 | Skidmang Nunnery School Skidmang | 03 | 05 | 03 | 06 | 03 | 20 |
| 48 | Tashi Chosling Nunnery School Kanam, Kinnour, H.P. | 06 | 06 | 04 | - | 04 | 20 |
| 49 | Yangchen Choling Nunnery School Spiti. | 17 | 13 | - | - | - | 30 |
| 50 | Tungri Nunnery School Zanskar | 12 | 02 | 08 | - | - | 22 |
| | Grand Total:- | 229 | 158 | 183 | 144 | 239 | 953 |

**Result of the students of Duzin Photang School, Zanskar,Leh-Ladakh
for the year 2011-2012:**

| <u>S.No.</u> | Class | No. of students enrolled | Appeared | Passed | Pass % |
|---------------------|-----------------|---|-----------------|---------------|---------------|
| 1. | 1 st | 26 | 23 | 14 | 61% |
| 2. | 2 nd | 31 | 29 | 20 | 65% |
| 3. | 3 rd | 31 | 29 | 14 | 48 % |
| 4. | 4 th | 34 | 33 | 23 | 70% |
| 5. | 5 th | 27 | 27 | 19 | 70% |
| 6. | 6 th | 36 | 32 | 19 | 59% |
| 7. | 7 th | 30 | 28 | 16 | 57% |
| 8. | 8 th | 17 | 17 | 11 | 65% |
| | Total | 232 | 218 | 136 | 62 % |

The staff strength of the Duzin Photang School, Zanskar:

| S.No | Teaching Staff | Grade | Sanction post | Position | Vacant |
|-------------------------------|------------------------|-----------------|---------------|----------|--------|
| 1. | Headmaster | 9300-34800+4600 | 1 | 1 | - |
| 2. | T.G.T(General) | 9300-34800+4200 | 5 | 5 | - |
| 3. | T.G.T (Contractual) | 17000(Fixed) | 2 | 2 | - |
| 4. | Primary Teacher | 5200-20200+2800 | 5 | 5 | - |
| B. NON- TEACHANG STAFF | | | | | |
| 1. | Cook | 4440-7440+1300 | 1 | 1 | - |
| 2. | Peon | 4440-7440+1300 | 1 | 1 | - |
| 3. | Driver(Contractual) | 7600(Fixed) | | 1 | - |
| 4. | Mali (Contractual) | 5740/=(Fixed) | - | 1 | - |
| 5. | Chowkider(contractual) | 5740/=(Fixed) | - | | |

Result of the Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, Lahaul & Spiti, H.P. for the year 2011-2012:

| <u>S.No.</u> | Class | No. of Students | Appeared | Passed | Pass % |
|---------------------|--------------|------------------------|-----------------|---------------|---------------|
| 1. | VI | 7 | 7 | 7 | 100% |
| 2. | VII | 10 | 10 | 10 | 100% |
| 3. | VIII | 8 | 8 | 8 | 100% |
| 4. | IX | 16 | 16 | 15 | 96% |
| 5. | X | 09 | 09 | 09 | 100% |
| | Total | 50 | 50 | 49 | 98% |

Annexure-

The Staff Strength of the Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, H.P.

| S.No | Teaching Staff | Pay Band + Grade pay | Sanctioned post | In position | Vacant |
|------|--------------------|----------------------|-----------------|-------------|--------|
| 1. | Headmaster | 930034800+4800 | 1 | - | 1 |
| 2. | T.G.T | 9300-34800+4600 | 8 | 7 | 1 |
| 3. | Phy Ed.Teacher | 9300-34800 | 1 | 1 | - |
| 4. | NON TEACHING STAFF | | | | |
| 5. | U.D.C | 5200-20200+2400 | 1 | 1 | - |
| 6. | Class-IV | 4440-7440+1300 | 3 | 3 | - |
